Website : www.akhilbharathindumahasabha.org
E-mail : editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org

प्रत्येक बुधवार को प्रकाशित

प्रति अंक मूल्य 4 रुपये

साप्ताहिक
हिन्दू सभा वार्ता

अखिल भारत हिन्दू महासभा का मुखपत्र

वर्ष- 42 अंक-02
कल्पादि सम्वत् 1972949118

सम्पादक
मुन्ना कुमार शर्मा

दिनांक 28 मार्च से 03 अप्रैल 2018 तक
चैत्र शुक्ल द्वादशी से वैशाख कृष्ण तृतीया 2075 तक

वार्षिक शुल्क 150 रुपये
पृष्ठ संख्या 12

चाणक्य और सावरकर... पृष्ठ- 3

डायबिटीज एवं.. पृष्ठ- 4

हनुमान जयंती... पृष्ठ- 5

पुणे का शनिवारवाडा... पृष्ठ- 8

धर्म परिवर्तन मानव... पृष्ठ- 12

- **श्रीराम मंदिर निर्माण ही तर्कसंगत एवं तथ्यपरक एकमात्र वैधानिक समाधान!**
- **वादी से रिसता प्रेम का कहवा**
- **जर्मनी में कुरान वितरण पर प्रतिबंध**
- **शशि थरूर की दृष्टि में रोजगार का अर्थ**

योगेन्द्र वर्मा फिर बने उत्तर प्रदेश हिन्दू महासभा के प्रदेशाध्यक्ष

• संवाददाता •

अखिल हिन्दू महासभा उत्तर प्रदेश का प्रदेश अधिवेशन अम्बा विहार में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री चन्द्र प्रकाश कौशिक की अध्यक्षता और राष्ट्रीय कार्यलय मंत्री श्री वीरेश त्यागी जी के संचालन में सम्पन्न हुआ। मुजफ्फरनगर पहुँचने पर हिन्दू महासभा के कार्यकर्त्ताओं ने मुजफ्फरनगर बाईपास पर राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री चन्द्र प्रकाश कौशिक जी का भव्य स्वागत किया और भगवा झंडों के साथ पार्टी कार्यालय पर जलूस के रूप में पहुँचे। उसके बाद सम्मेलन स्थल पर पहुँचे जहां सभी पदाधिकारियों ने राष्ट्रीय अध्यक्ष को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। सर्वप्रथम पूरी प्रदेश कार्यकारिणी तत्काल प्रभाव से भंग की गई। और राष्ट्रीय उपाध्यक्ष पं० अशोक शर्मा ने उत्तर प्रदेश अध्यक्ष के रूप में योगेन्द्र वर्मा के नाम का प्रस्ताव रखा। जो सर्वसम्मति से पास किया गया। कार्यक्रम में हिन्दू रक्षा दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष भूपेन्द्र तोमर, विश्व हिन्दू परिषद के प्रान्तीय उपाध्यक्ष सचिन सिंघल, हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय सचिव महन्त पूजानन्द गिरि, स्वामी सहजानन्द, राष्ट्रीय प्रवक्ता शेष पृष्ठ 10 पर

महाचंडी देवी मंदिर ध्वजारोहण यात्रा का शहरवासियों ने किया भव्य स्वागत

• संवाददाता •

आज दिन सोमवार चैत्र शुक्ल पक्ष के दित्तीय नवारात्रि के पावन पर्व पर मेरठ में लगतार बयालीस (४२) वर्षो से अखिल भारत हिन्दू महासभा द्वारा जय हिन्दू राष्ट्र के बैनर तले निकाले जाने वाली (४३) तेतालीसवीं प्राचीन मां महाचंडी देवी मंदिर नौचंदी मैदन स्थित मंदिर के लिए ध्वजारोहण यात्रा बड़ी ही धूमधाम से निकली गई। यात्रा का उदघाटन हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय महासचिव श्री मुन्ना कुमार शर्मा जी ने किया। ध्वजारोहण यात्रा कार्यक्रम की अध्यक्षता हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष पंडित अशोक कुमार शर्मा जी ने की। ध्वजारोहण यात्रा का संचालन हिन्दू महासभा के जिलाध्यक्ष अभिषेक अग्रवाल ने किया। राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा ने उपस्थित जनों को हिन्दू नववर्ष विक्रमी संवत् २०७५ की शुभकामनायें दीं तथा कहा कि ध्वजारोहण यात्रा पिछले (४२) वर्षो से लगातार अंखड हिन्दू राष्ट्र के पुनः निर्माण की मंगल कामना के साथ निकाली जा रही है। ध्वजारोहण का मुख्य आकर्षण हमेशा से ध्वजारोहण यात्रा के सबसे आगे चलने वाला जय हिन्दू राष्ट्र का बैनर होता है। यात्रा के वातावरण के भक्तिमय बनाने का कार्य यात्रा में शामिल शहनाई, ढोल, ताशा, पार्टी के कलाकार करते चल रहे थे। यात्रा में शामिल श्रीदुर्गा माता रथ के आगे हिन्दू महासभा व महाकाल सेवा समिति के कार्यकर्ता प्राचीन अस्त्रों शस्त्रों का प्रदर्शन करते चल रहे थे। माता रानी के रथ पर माता रानी की सुन्दर प्रतिमा विराजमान थी। महादेवी के सुन्दर रथ को सुगन्धित पुष्पों के साथ साथ माता रानी के श्रृंगार प्राचीन अस्त्र शेष पृष्ठ 11 पर

धरती का बैकुण्ठ

पुराणों में जगन्नाथ पुरी को धरती का बैकुंठ कहा गया है। ब्रह्म और स्कंद पुराण के अनुसार, पुरी में भगवान विष्णु ने पुरुषोत्तम नीलमाधव के रूप में अवतार लिया था। वह यहाँ सबर जनजाति के परम पूज्य देवता बन गए। सबर जनजाति के देवता होने की वजह से यहाँ भगवान जगन्नाथ का रूप कबीलाओं देवताओं की तरह है। जगन्नाथ मंदिर की महिमा देश में ही नहीं विश्व मे भी प्रसिद्ध है।

वैसे, इस मंदिर से जुड़ी कुछ ऐसी चमत्कारी बातें हैं जो सभी को आश्चर्यचकित कर देती हैं–

❖ जगन्नाथ मंदिर के शिखर पर स्थित झंडा हमेशा हवा की विपरीत दिशा में लहराता है।

❖ इसी तरह मंदिर के शिखर पर एक सुदर्शन चक्र भी है। इस चक्र को किसी भी दिशा से खड़े होकर देखने पर ऐसा लगता है कि चक्र का मुँह आपकी तरफ है।

❖ मंदिर की रसोई में प्रसाद पकाने के लिए ७ बर्तन एक–दूसरे के ऊपर रखे जाते हैं। यह प्रसाद मिट्टी के बर्तनों में लकडी पर ही पकाया जाता है। इस दौरान सबसे ऊपर रखे बर्तन का पकवान पहले पकता है फिर नीचे की तरफ से एक के बाद एक प्रसाद पकता जाता है।

❖ मंदिर के सिंहद्वार से पहला कदम अंदर रखने पर ही आप समुद्र की लहरों से आने वाली आवाज को नहीं सुन सकते। आश्चर्य में डाल देने वाली बात यह है कि जैसे ही आप मंदिर से एक कदम बाहर रखेंगे, वैसे ही समुद्र की आवाज सुनाई देने लगती है। यह अनुभव शाम के समय और भी अलौकिक लगता है।

❖ हमने ज्यादातर मंदिरों के शिखरों पर पक्षी बैठे और उड़ते देखे हैं। जगन्नाथ मंदिर की यह बात आपको चौंका देगी कि इसके ऊपर से कोई पक्षी नहीं गुजरता। यहाँ तक कि हवाई जहाज भी मंदिर के ऊपर से नहीं निकलता।

❖ मंदिर में हर दिन बनने वाला प्रसाद भक्तों के लिए कभी कम नहीं पडता साथ ही मंदिर के पट बंद होते ही प्रसाद भी खत्म हो जाता है।

❖ दिन के किसी भी समय जगन्नाथ मंदिर के मुख्य शिखर की परछाई नहीं बनती।

❖ एक पुजारी मंदिर के ४५ मंजिला शिखर पर स्थित झंडे को रोज बदलता है। ऐसी मान्यता है कि अगर एक दिन भी झंडा नहीं बदला गया तो मंदिर १८ वर्षों के लिए बंद हो जाएगा।

❖ आमतौर पर दिन में चलने वाली हवा समुद्र से धरती की तरफ चलती और शाम को धरती से समुद्र की तरफ। चकित कर देने वाली बात यह है कि पुरी में यह प्रक्रिया उल्टी है।

भारत का सरकारी सम्वत्/कैलेण्डर कौन सा है?

देश में नौ तरह के सम्वत् प्रचलित हैं। शक सम्वत् ७८ ईस्वी में, कुषाण शासक कनिष्क द्वारा स्थापित किया गया। दीर्घकाल तक शकों द्वारा प्रयोग में लाए जाने के कारण शक सम्वत् कहलाया। भारत सरकार ने सरकारी उद्देश्य के लिए २२ मार्च १९५७ को राष्ट्रीय पंचाग/सम्वत्/कैलेण्डर को अपनाया। भारतीय राष्ट्रीय पंचाग/कैलेण्डर शक सम्वत् पर आधारित है। ७८ ईस्वी में शुरू हुए शक सम्वत् का पहला महीना चैत्र का है। ग्रिगेरियन कैलेण्डर का भी यही आधार है। राष्ट्रीय कैलेण्डर के अनुसार एक वर्ष में १२ महीने या ३६५ दिन होते हैं। ग्रिगेरियन कैलेण्डर और शक सम्वत् की तिथियों में स्थायी रूप से समानता है। शक सम्वत् (सरकारी कैलेण्डर) के अनुसार वर्ष का प्रारम्भ चैत्र प्रथम तिथि को होता है। जो ग्रिगेरियन कैलेण्डर के अनुसार सामान्य वर्षो में २२ मार्च को तथा लीप वर्ष में २१ मार्च को पड़ता है। मुख्य रूप से राष्ट्रीय पंचाग (कैलेण्डर) जिन सरकारी उद्देश्यों के लिए अपनाया गया है, वे निम्न हैं:– १. आकाशवाणी के समार प्रसारण २. भारत का राज पत्र ३. भारत सरकार द्वारा जारी कैलेण्डर ४. भारत सरकार द्वारा जारी सार्वजनिक विज्ञप्तियाँ आदि। इस कैलेण्डर का १२ वां महीना फाल्गुन का होता है। इसके महीनों को कृष्ण पक्ष और शुक्ल पक्ष में नहीं बाँटा जाता है। जनता के इस कैलेण्डर को अपनाकर इसे लोक प्रिय बनाना चाहिए। २२ मार्च २०१ को ०१–०१–१९४० प्रारम्भ हुआ है। दोनों कैलेण्डरों में ७८ वर्ष का अन्तर रहता है। **इन्द्र देव गुलाटी, संस्थापक, बुलन्दशहर**

साप्ताहिक राशिफल

मेष : कुछ लोग इस सप्ताह सामाजिक गतिविधियों में बढ़–चढ़कर भाग लेंगे। जीवन जीने की एक कला होती है, जिस दिन आप उसे समझ पायेंगे, उस दिन से समस्यायें आप पर दबाव नहीं बना पायेंगी। हर तरह के कार्य करने से मन उर्जावान व शक्तिशाली बनता है।

वृष : समस्यायें केवल कमजोर और कायर व्यक्ति को डरा एंव सता सकती है। आप तो आशावादी एंव सकारात्मक विचारधारा के है। समस्यायें शरीर की छाया की तरह होती है, उनसे भागा नहीं जा सकता है। दिमाग पर नियर्न्त्रण करके ही उनको पराजित किया जा सकता है।

मिथुन : जब व्यक्ति परेशान होता है तो बहुत सारे लोग मौखिक सहानुभूति देने वाले होते है, मगर असल में सहयोग करने वाले वही होते है, जो सच्चे व ईमानदार होते है। व्यर्थ की उलझनों से अपने–आपको बचाने का प्रयास करें। हर दुःख सुख की चिठ्ठी लेकर आता है।

कर्क : कुछ लोगों के लिए यह सप्ताह मनोरंजनकरी रहेगा। धार्मिक यात्रओं का योग बना रहा है। किसी स्थान पर विशेष व्यक्ति से मुलाकात हो सकती है जिससे आपके मधुर सम्बन्ध बनेंगे जो भवष्यि में लाभकारी सिद्ध होंगे। नयें लोगों को अच्छे अवसर मिलने की सम्भावना नजर आ रही है।

सिंह : इस समय बेवजह की शंकायें न पालें। पूर्वा ग्रहों पर आधारित शंकाये अपनो से दूर करने में समय नहीं लगाती है। इसलिए जो भी करें वह सोंच–समझकर ही करें। अन्यथा का पछितावे होत है, जब चिड़ियों चुन गयी खेत वाली कहावत चरितार्थ हो सकती है।

कन्या : इस सप्ताह कुछ लोगों की मनोकूल इच्छायें पूरी होने से उनके घर में सुखद वातावरण का माहौल रहेगा। किसी पर व्यर्थ की टीका–टिप्पणी न करें क्योंकि आपके कहने से उस पर कोई असर नहीं पड़ेगा बल्कि आप पर ही लोग छींटा–कशी कर सकते है।

तुला : इस समय कुछ लोग अपने काम से परेशान रहेंगे, क्योंकि कोई भी इन्सान हमेशा एक जैसा कार्य करने से परेशान हो जाता है। कभी–कभी आपकी कार्यक्षमता अच्छी होती है और कभी कम। इसलिए कोई गल्ती हो जाये तो उसे छुपायें नहीं।

वृश्चिक : इस समय कुछ लोग अपने काम से परेशान रहेंगे, क्योंकि कोई भी इन्सान हमेशा एक जैसा कार्य करने से परेशान हो जाता है। कभी–कभी आपकी कार्यक्षमता अच्छी होती है और कभी कम। इसलिए कोई गल्ती हो जाये तो उसे छुपायें नहीं।

धनु : आपका समय परिवार के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अतः आप जिम्मेदारियों से मुँह न मोंड़े। आपको अपनी पहचान खोने का डर सताये जा रहा है किन्तु जिस पथ पर आप तेज रफ्तार से चल रहें है, उसकी कोई मंजिल नहीं है।

मकर : याद रखें कि काम करने की क्षमता जितनी बढ़ेगी आप सफलता के शिखर पर उतनी ही तेजी से पहुँचेंगे। हर नयें अवसर का दोहन करने का भरपूर प्रयास करें। महिलायें अपने सौन्दर्य को अपना हथियार न बनायें तो बेहतर रहेगा। आप वाद–विवाद से दूर ही रहें तो हितकर रहेगा।

कुम्भ : इस सप्ताह जाब करने वाले लोग अपने आफिस की गतिविधियां समझने का प्रयास करें अन्यथा सावधानी हटी दुर्घटना घटी वाली कहावत चरितार्थ हो सकती है। अपने सहयोगियों के प्रति सकारात्मक रवैया अपनाना ही एक बेहतर सुरक्षा है।

मीन : कुछ लोगों के यहां नन्हे मेहमान के आने की सम्भावना नजर आ रही है। जिससे पूरे परिवार में खुशी की लहर दौड़गी। प्राइवेट जाब वाले लोग याद रखें कि कभी अपने स्वाभिमान से समझौता न करें। वही आपकी पूँजी है। पं० दीनानाथ तिवारी

श्रीमद्भगवत गीता

यो मामेवमसम्मूढो जानाति पुरुषोत्तमम्।
स सर्वविद्भजति मां सर्वभावेन भारत।।

भारत! जो ज्ञानी पुरुष मुझ को इस प्रकार तत्त्व से पुरुषोत्तम जानता है, वह सर्वज्ञ पुरुष सब प्रकार से निरन्तर मुझ वासुदेव परमेश्वर को ही भजता है।।१९।।

इति गुह्यतमं शास्त्रमिदमुक्तं मयानघ।
एतदबुद्ध्वा बुद्धिमान्स्यात्कृतकृत्यश्च भारत।।

हे निष्पाप अर्जुन! इस प्रकार यह अति रहस्ययुक्त गोपनीय शास्त्र मेरे द्वारा कहा गया, इसको तत्त्व से जानकर मनुष्य ज्ञानवान् और कृतार्थ हो जाता है।।२०।।

अथ षोडशोऽध्यायः

अभयं सत्त्वसंशुद्धिर्ज्ञानयोगव्यवस्थितिः।
दानं दमश्च यज्ञश्च स्वाध्यायस्तप आर्जवम्।।

श्री भगवान् बोले– भयका सर्वथा अभाव, अन्तःकरण की पूर्ण निर्मलता, तत्त्वज्ञान के लिये ध्यानयोग में निरन्तर दृढ़ स्थिति और सात्विक दान, इन्द्रियों का दमन, भगवान्, देवता और गुरुजनों की पूजा तथा अगिनहोत्र आदि उत्तम कर्मो का आचरण एवं वेद–शास्त्रों का पठन–पाठन तथा भगवान् के नाम और गुणों का कीर्तन, स्वधर्मपालन के लिये कष्टसहन और शरीर तथा इन्द्रियों के सहित अन्तःकरण की सरलता।।१।।

साप्ताहिक
हिन्दू सभा
वार्ता
दिनांक 28 मार्च से 03 अप्रैल 2018 तक

अध्यक्षीय

जीवन को एक यज्ञ बनायें

यज्ञ का अर्थ पवित्र कार्य करना है। भौतिक रूप में यज्ञ शुद्धिकरण की एक प्रक्रिया है जो मानव को तन और मन से पवित्र करती है। अग्निहोत्र यज्ञ को वैज्ञानिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से प्रमाणित एवं अति हितकारी स्वीकार किया गया है। हमारे ऋषियों ने यज्ञ को अत्यंत व्यापक अर्थो में प्रयोग किया है। हवन करना ही यज्ञ नहीं है, किसी पीड़ित की सहायता के लिये तत्पर रहना भी यज्ञ है। इस नाते हिन्दू धर्म में पंच यज्ञों का प्रावधान है जिसमें अग्निहोत्र हवन के साथ–साथ भावनात्मक एवं वैचारिक यज्ञ भी है। मानव का विकास एकांगी नहीं हो सकता। वह समाज के मध्य ही उन्नति करता है। समाज में भी एक–दूसरे के प्रति दायित्व भावना हो, जीवन सरल और सहज हो जाता है। परस्पर सहयोग से ही जीवन और सृष्टि चलती है। यह एक प्राकृतिक नियम है कि अन्तरिक्ष का अस्तित्व भी विभिन्न नक्षत्रों और तारों के आपसी सन्तुलन और सहयोग से है। पृथ्वी पर जीवन इसलिये हैं क्योंकि अन्य ग्रह और नक्षत्र उसके प्रति अनुकूल व्यवहार करते हैं। चाहे वृक्ष हो या नदी–नाले उनका जीवन किसी–न किसी के सहयोग पर आधारित होता है। जब भी सहयोग का सन्तुलन समाप्त हुआ, विनाश की करूण गाथा लिखी गई। अनेक जीव, नदियां और सागर केवल इसलिये नष्ट हो गये, क्योंकि प्रकृति अपने सहयोगात्मक संतुलन को स्थिर नहीं रख पायी थी। जब हम इसी सदंर्भ को मानव जीवन के अस्तित्व और उसकी विकास धारा में देखते हैं तो पाते है कि सहयोगात्मक सन्तुलन के आभाव में धरती युद्ध का केन्द्र बन गयी। दोनों महायुद्ध आपसी अविश्वास के कारण हुए। मध्य एशिया के आक्रमणकारियों ने लगातार १० शताब्दी तक हिंसा का तांडव मचाया क्योंकि वे शेष विश्व से सन्तुलन नहीं बना पा रहे थे। आतंकवाद और ध र्मान्तरण का जहर भी इस कारण से है, क्योंकि कुछ व्यक्ति यह समझते हैं कि, शेष विश्व उनसे पृथक हैं और वे उससे श्रेष्ठ है, अतः अन्य को नष्ट करना ही उनका ध्येय है। भारतीय ऋषियों की दृष्टि यज्ञमय है। वे कहते हैं कि, आप स्वयं अकेले नहीं है। आपके साथ–साथ दूसरों का हित सर्वोपरि है। अग्निहोत्र यज्ञ के समय धृत और औषधियों की आहूति दी जाती है। उससे निकला हुआ, पूरे परिवेश को स्वास्थ्यवर्द्धक और पवित्र बनाता है। यदि व्यक्ति धृत का सेवन स्वयं करता, तो उसका लाभ व्यक्ति विशेष को होता, लेकिन अग्निहोत्र के द्वारा सैकड़ों को लाभ प्राप्त होता है। जहां–जहां हवन का धुआ जाता है, वहां–वहां हितकारी परिवेश का निर्माण होता है। यह हमारे धर्म की सहयोगात्मक संतुलन प्रक्रिया है। विश्व में कही यह भाव नहीं मिलेंगे। प्रत्येक पंथ में व्यक्ति केवल अपने कल्याण के लिये मजहबी कर्मकांड करता है। वह केवल इतना जानता है कि उसे स्वर्ग कैसे प्राप्त होगा। उसका पूरा जीवन स्वर्ग की इच्छा में व्यतीत हो जाता है। इसी भ्रम में वह आंतकवाद भी फैलाता है और धर्मान्तरण भी कराता है लेकिन वह नहीं जानता कि ईश्वर घृणा को पसन्द नहीं करता। वह उसे महत्व देता है जो मन और तन से लोक हित के कार्यो में संलग्न रहते हैं। भारतवर्ष ऋषियों का देश है। यहां धर्म का अर्थ कर्मकांड न होकर कर्त्तव्यबोध है। इस नाते ऋषि कहते हैं कि हे मनुष्य! अपने जीवन को सुगन्धित और यज्ञ मय बनाओ। भाव यह है कि जब ऐसा हो कि उसकी सुरभि चारों और फैले, लोग हमारे निकट आने पर प्रसन्न और आन्नदित अनुभव करें। प्रत्येक हितकारी कार्य को यज्ञ समझें। जिस प्रकार यज्ञ करते समय हम ईश्वर को साक्षी मानते हैं, और निष्काम भाव से अपनी आराधना को समर्पित करते है, उसी भांति जीवन के प्रत्येक कार्य में यज्ञ की भावना हो। किसी पीड़ित की सेवा करना भी यज्ञ है। सत्य की रक्षा करना, सबको अभय दान देना, अच्छी बातें ग्रहण करने के लिये सदा तत्पर रहना, यज्ञ की श्रेणी में आता है। जीवन की सार्थकता स्वयं की उन्नति नहीं है। इससे प्रकृति को संतुलन में बाधा उत्पन्न होती है, अपनी उन्नति के साथ–साथ जनहित के कार्य करना पहली आवश्यकता है।

राष्ट्रीय उद्‌बोधन
चन्द्र प्रकाश कौशिक
राष्ट्रीय अध्यक्ष

E-mail : chandraprakash.kaushik@akhilbharathindumahasabha.org

सम्पादकीय

चाणक्य और सावरकर चाहियें देश को

भारतीय राजनीति का घटनाक्रम जिस तेजी के साथ अभारतीय और हिन्दू विरोधी होता जा रहा है, उसे देखकर लगता है कि किसी आचार्य चाणक्य की आवश्यकता है, जो किसी झोपड़ी में पल रहे चन्द्र को खोजकर सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य बना सके और भारत को विश्वगुरू तथा सोने की चिड़िया का गौरवशाली सम्मान दिला सके। वीर सावरकर ने आचार्य चाणक्य की नीतियों को नवीन आयाम दिये थे लेकिन दीर्घ कारावास में रहने के पश्चात उनके पास न तो इतना समय था और न ही स्वास्थ्य अनुकूल कि वे गांधी और नेहरु के आभा मण्डल को तोड़ विशुद्ध राष्ट्रवाद के संकल्पों को स्थापित कर सकें। आज आचार्य चाणक्य के राजनीतिक दर्शन के साथ–साथ वीर सावरकर की राष्ट्रीय अवधारणा की आवश्यकता का अनुभव हो रहा है। देश नायकत्व के अभाव में है। राजनेता कुर्सी प्राप्ति के संघर्ष में हैं, हिन्दू समाज जातिवाद और राजनीतिक उदासीनता का शिकार है। यह स्थिति ऐसी नहीं है कि, इससे मुक्ति न ली जा सके। केवल आवश्यकता इस बात की है कि हिन्दू महासभा की भांति सभी हिन्दू संस्थायें अपने दायित्वों का ठीक से पालन करे। इस समय समन्वित प्रयासों की आवश्यकता है। देश का भाग्य कोई एक संस्था नहीं बदल सकती। हम जी–जान से लगे हैं हिन्दुत्व के प्रचार में। इसी भांति यह भी जानते हैं कि, सभी हिन्दू संस्थायें सक्रियता से आगे आये। हम आचार्य चाणक्य के इस सूत्रवाक्य पर ध्यान देना चाहिये कि, दुष्ट जनों का प्रकोप सज्जन व्यक्तियों की उदासीनता के कारण बढ़ता है। यदि सज्जन समाज अपने दायित्वों को ठीक से निर्वाह करता है, तो कोई ऐसा कारण नहीं है कि देश में भ्रष्टाचार, आतंकवाद और धर्मान्तरण जैसे अमानवीय, अराष्ट्रीय और जनविरोधी कृत्य हो जाये। वीर सावरकर का चिन्तन भी वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उतना ही महत्त्वपूर्ण है, जितना आचार्य चाणक्य का। वीर सावरकर ने कहा था कि जागरूक नागरिक ही देश के संसाधनों के वास्तविक अधिकारी होते है।स्वतंत्रता के पश्चात से हिन्दू समाज के मस्तिष्क में यह भ्रम डाल दिया गया कि अंग्रेजों से स्वतंत्रता ही उसका एक मात्र लक्ष्य है, जो उसे मिल चुका है। इसके पश्चात न तो उसकी कोई इच्छा है और न ही वैचारिकी। सवतंत्रता प्राप्ति लक्ष्य नहीं होता। वह लक्ष्य का प्रथम सोपान है। लक्ष्य को राष्ट्र को गौरवान्वित करना है और नौ शताब्दियों के परतंत्र परिवेश से निकलने वाले समाज का प्रथम कर्त्तव्य होता है कि, पराधीनता के काल के प्रतीकों को नष्ट करना लेकिन भारत में इस प्रकार के कोई प्रयास नहीं किये गये। आचार्य चाणक्य ने कहा था कि, रोग और शत्रु को कभी भी मध्य में नहीं छोड़ना चाहिये। उसका अन्त आवश्यक है। यदि देश में अंग्रेजी अभी तक व्यवस्था पर हावी है, कानून वहीं है जो अंग्रेजो द्वारा बनाये गये, श्रीराम के सामने बाबर सम्मानित किया जा रहा है, तो यह समझ लेना चाहिये शत्रु वैचारिक आधार पर व्यवस्था पर हावी है। हमने राष्ट्र को भौतिक दृष्टि से स्वतंत्र कराया है लेकिन मानसिक आध ार पर भारत परतंत्र है। वीर सावरकर ने आचार्य चाणक्य की नीतियों को ही आगे चलाया और भारत समाज को नीतियों और रणनीतियों से अवगत कराया। यदि हम स्वतंत्रता के कारणों का अध्ययन करें तो पाते हैं कि वीर सावरकर ने आचार्य चाणक्य के आदर्शों को स्वीकार कर स्वतंत्रता आन्दोलन को व्यावहारिक रूप दिया। यदि वीर सावरकर हिन्दुओं का सैनिकीकरण का अभियान न चलाते और सुभाषचन्द्र बोस को आजाद हिन्द फौज का नेतृत्व सम्भालने के लिये प्रेरित न करते तो गांधीजी कितने भी सत्याग्रह करते, स्वतंत्रता सम्भव नहीं थी। 18 फरवरी 1946 का सैनिक विद्रोह वीर सावरकर की रणनीति का ही परिणाम था। आज पुनः वीर सावरकर की आवश्यकता का अनुभव हो रहा है। हिन्दुत्व उपेक्षित है, राष्ट्र को विस्मृत किया जा रहा है, हिन्दू संस्थायें उदासीन है। ऐसे में आचार्य चाणक्य की नीतियों पर चलने वाला, कोई सावरकर चाहिये।

राष्ट्रीय आह्वान
मुन्ना कुमार शर्मा
राष्ट्रीय महासचिव

E-mail : munna.sharma@akhilbharathindumahasabha.org

डायबिटीज एवं नपुंसकता

✍ वैद्य वी.यस. पाण्डेय

डायबिटीज अंतःस्रावी क्लोम ग्रंथि (पैंक्रियाज) का रोग है। यह ग्रंथि आमाशय के नीचे ग्रहणी के बीच में पड़ी रहती है और इससे इंसुलिन नामक हार्मोन निकलकर रक्त में मिलता है। यह रक्त में उपस्थित शर्करा भोजन के द्वारा लिये गये कार्बोहाइड्रेट्स के पाचन के पश्चात पहुँचती है और ग्लूकोज के रूप में रहती है।

शरीर में ऑक्सीजन एवं ग्लूकोज द्वारा ऊर्जा उत्पन्न होने के पश्चात शेष शर्करा की रक्त में अतिरिक्त मात्रा इंसुलिन द्वारा ही ग्लाइकोजन में परिवर्तित होकर लीवर और मांसपेशियों में एकत्र हो जाती है और रक्त में शर्करा बढ़ने नहीं देती है। जैसा कि आप सभी लोग यह जानते हैं कि डायबिटीज आज पूरे विश्व में महामारी का रूप ले चुका है। यह एक अकेली बीमारी नहीं बल्कि मेटाबॉलिक सिंड्रोम है।

डायबिटीज मुख्यतः तीन प्रकार की होती है

टाइप १ : डायबिटीज–इसमें पीड़ित लोगों में या तो इंसुलिन का निर्माण नहीं होता या फिर बहुत ही कम मात्रा में होता है। यह किसी भी आयुवर्ग के लोगों में हो सकता है लेकिन बच्चे और युवा इसके ज्यादा शिकार होते हैं। इसमें रक्त में ग्लूकोज का स्तर नियंत्रित रखने के लिए इंसुलिन का इंजेक्शन लेना पड़ता है। इस प्रकार के डायबिटीज के रोगियों को नेत्रहीनता, किडनी फेल्योर, नसों की क्षति, अंग विच्छेदन, हार्ट की समस्या आदि हो सकती है।

टाइप २ : डायबिटीज–पूरी दुनिया में डायबिटीज से पीड़ित लोगों में ९० प्रतिशत टाइप २ डायबिटीज से पीड़ित हैं। इसमें रक्त में शुगर का स्तर अनियंत्रित हो जाता है। मोटापे एवं डायबिटीज टाइप–२ का सीधा सम्बन्ध होता है।

टाइप ३ : डायबिटीज गैस्टेशनल डायबिटीज हाइपर ग्लैसीमियां है जोकि सबसे पहले गर्भावस्था के द्वारा पहचानी जाती है। इसके लक्षण भी टाइप–२ डायबिटीज के समान ही हैं।

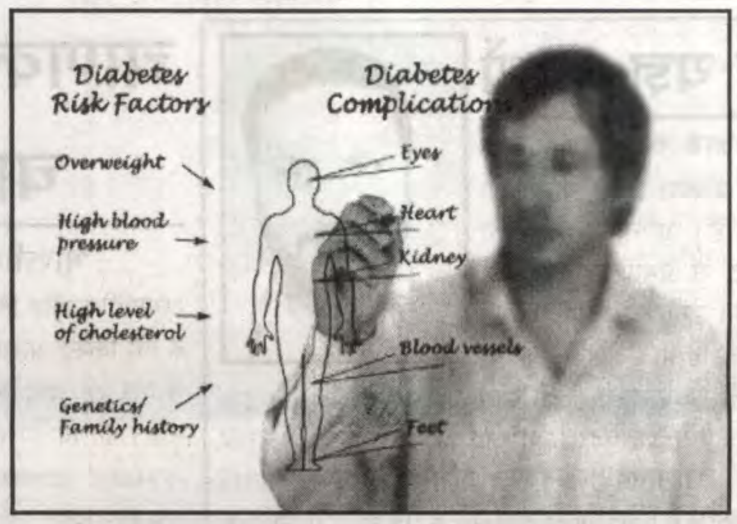

डायबिटीक इम्पोटेंसी

मेरूरज्जु और यौनांगों के बीच स्नायुतंत्र द्वारा हर तरह की अनुभूतियों का आदान–प्रदान होता है। मस्तिष्क में यौन अनुभूतियों के लिए अलग–अलग स्थान होते हैं। यहाँ श्रवण, दृष्टि, गंध और स्पर्श से प्राप्त संवेदनाओं से खास तरह के संकेत पैदा होते हैं जोकि मेरूरज्जु द्वारा पुनः यौन अंगों तक पहुँचकर उन्हें उत्तेजना प्रदान करते हैं। शिश्न में उत्तेजना के लिए स्नायुतंत्र की क्षमता का ठीक रहना आवश्यक है। साथ ही शिश्न में रक्तप्रवाह भी ठीक तरह से होना जरूरी है।

पुरुष का शिश्न सामान्य दशाओं में छोटे आकार और ढीले रूप में होता है क्योंकि इन्द्रियों द्वारा कामेच्छा जाग्रत होने पर मेरूरज्जु से यौनांगों तक अनुभूतियाँ पहुँचती हैं। जब रक्तप्रवाह शिश्न की ओर होता है और फिर शिश्न आकार में आकर कठोर हो जाता है। डायबिटीज होने पर तंत्रिकाओं की क्षमता घट जाती है। शिश्न में खून पहुँचाने वाली शिराओं में भी अस्वस्थता रह सकती है। नतीजतन इच्छा होने पर भी शिश्न में उतना कड़ापन नहीं आ पाता जितना आना चाहिए। इस तरह से मधुमेही की यौन क्षमता प्रभावित होती है।

दूसरी बात यह भी है कि मधुमेही में लक्षणों के अनुसार कमजोरी और आलस्य रहना तथा उत्साह का अभाव बने रहना ये मानसिक स्थितियाँ भी उसकी यौन क्षमता को प्रभावित करती हैं।

ऐसा माना जाता है कि सामान्य व्यक्ति की अपेक्षा मधुमेही में १०–१५ वर्ष पहले ही यौन क्षमता का ह्रास हो जाता है लेकिन यहाँ इस बात को समझना जरूरी है कि यह स्थिति तब बनेगी जब रोगी मधुमेह पर नियंत्रण के प्रयास नहीं करे और रक्त में शुगर की मात्रा बनी हुई रहे। ऐसी स्थिति में लिंग में खून ले जाने वाली नलिकाएँ प्रभावित हो जाती हैं। हालाँकि उन नलिकाओं के प्रभावित होने में लम्बा समय लगता है और इस बात पर निर्भर करता है कि एक लम्बे समय तक मधुमेही के रक्त में शुगर की मात्रा अधिक रही हो। रोग के कुछ और भी लक्षण यौन क्षमता को प्रभावित करते हैं जैसे पेशाब की जगह में खुजली होना या घाव हो जाना अथवा दर्द व जलन होना आदि।

टाइप-१ मधुमेहियों में स्नायुतंत्र की खराबी अधिकतर पाई जाती है। जबकि **टाइप-२** मधुमेहियों में धमनियों में रूकावट से रक्त प्रवाह की कमी के कारण यौन क्षमता का ह्रास होता है। जिन महिलाओं को मधुमेह होता है उनकी कामेच्छा भी प्रभावित होती है। मधुमेह में जननांगों पर खुजली चलना, योनि सूखी रहना तथा इन्फेक्शन हो जाना सामान्य है। यही कारण है कि महिलाओं की डायबिटीज कामेच्छा घटाने का काम करती है।

पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं में कामेच्छा घट जाने का एक मुख्य कारण मनोवैज्ञानिक भी होता है। जिन स्त्री–पुरुषों में मधुमेह नियंत्रण में नहीं होता उन्हें कई तरह की शारीरिक और मानसिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। ये समस्याएँ यौन क्षमता में अवरोध पैदा कर देती हैं।

डायबिटीज और नपुंसकता का सफल आयुर्वेदिक उपचार

मधुमेह रोगियों को नियंत्रित करने के लिए निम्न उपचार करने चाहिए।

बसन्तकुसुमाकररस, सतगिलोय, मुक्तापिष्टी, प्रवाल पंचामृत रस, योगेन्द्र रस, त्रिफला, इन सबको मिलाकर इनकी पुड़िया बनाकर दिन में तीन बार खाने से पहले ही खाना चाहिए। खाने के बाद मधुमेहनाशिनी वटी २–२ गोली (स्वर्ण घटित) आसुतोष रस एवं चित्रकादी वटी का प्रयोग दिन में तीन बार करें।

अन्य ऐसे बहुत से योग हैं जिनके प्रयोग से इस बीमारी को समूल नष्ट कर सकते हैं।

❖ यदि डायबिटीक पेशेंट को हृदय रोग की भी शिकायत है तो योगेन्द्र रस एवं बृ. बंगेश्वररस का भी प्रयोग करना चाहिए। डायबिटीज की बीमारी को समूल नष्ट करने के लिए ३ से ५ किमी. तक तेज रफ्तार से टहलना चाहिए। इससे सभी रोग समूल नष्ट हो जाते हैं।

❖ नपुंसकता दूर करने के लिए प्रमेह केशरी रस, मन्मथ रस, कामचूर्ण मणि रस, चन्द्रोदय रस का प्रयोग कर नपुंसकता दूर कर सकते हैं। शेष पृष्ठ 11 पर

उत्तर प्रदेश में योगी सरकार का २०१८-१९ का बजट

सब पर करम

अल्पसंख्यक कल्याण

2757 करोड़ रुपये अल्पसंख्यकों के विकास एवं कल्याण की योजनाओं के लिए

❖ 404 करोड़ अरबी–फारसी मदरसों के आधुनिकीकरण योजना हेतु

❖ 486 करोड़ अरबिया पाठशालाओं को अनुदान के लिए

❖ 415 करोड़ –आलिया स्तर के स्थायी मान्यता प्राप्त २४६ अरबी–फारसी मदरसों को अनुदान हेतु

❖ 70 वर्षों में मुस्लिमों पर अरबों रुपए खर्च किए गए फिर भी वे सन्तुष्ट नहीं है।

❖ गोरखनाथ मंदिर के संस्थापक महन्त दिग्विजय नाथ ने वसीयत लिखी थी कि मन्दिर का महन्त राजनीतिक क्षेत्र में हिन्दू महासभा में ही रहेगा।

❖ दिग्विजय नाथ के कार्यकाल में मुस्लिम महिलाएं बुर्का पहनकर मंदिर के आस–पास आने में डरती थी।

❖ हिन्दू महासभा के केन्द्रीय नेताओं से निवेदन है कि वे अच्छे वकीलों से पूछकर गुम हो गई वसीयत की जगह स्थानीय नागरिकों के शपथ पत्र दाखिल करके वसीयत की वैकल्पिक व्यवस्था करें ताकि मन्दिर का महन्त हिन्दू महासभा में ही रहने को बाध्य हो जाए

बहुसंख्यक कल्याण

विकास एवं कल्याण की योजनाओं के लिए धनराशि

❖ अरबी फारसी मान्यत प्राप्त भाषाएँ नहीं हैं। इनके लिए धनराशि देना गैर कानूनी है।

❖ संस्कृत का ध्यान क्यों नहीं रखा जाता है?

❖ अरबिया पाठशालाओं को अनुदान क्यों?

❖ संस्कृत विद्यालय की जर्जर हालात पर दया क्यों नहीं आती है?

❖ अरबी–फारसी मदरयों की मान्यता असवैधानिक है जिसे रद्द किया जाए।

❖ सभी पार्टियों ने हिन्दू की उपेक्षा व अवहेलना पर कमर कसी हुई है क्योंकि उसका वोट बैंक नहीं है। वह अभी भी सेकुलर कहने पर गर्व अनुभव करता है।

❖ नई दिल्ली कार्यालय में वह वसीयत गुम हो गई फिर केन्द्रीय नेताओं ने वकीलों से पूछकर कोई वैकल्पिक व्यवस्था नहीं की। इसका भाजपा ने लाभ उठा लिया। उसने अपने टिकट पर महन्तों को सांसद बनवाना शुरू कर दिया।

❖ अब महन्त योगिनाथ के कार्यकाल में मुस्लिम मंदिर के गर्भ गृह में भी बिना पूछे चाहे जब चला जाता है। अब मुस्लिम डरता नहीं है।

❖ वर्तमान महन्त योगी आदित्यनाथ सावरकरवाद की जगह भाजपा के गांधीवादी कार्यो को ही कर रहे हैं। वे भूल गए हैं कि उनके असली गुरु तो दिग्विजय नाथ हैं। दिग्विजय नाथ के आदर्शों पर वे तभी चल सकते हैं जब वे हिमस में आ जाएं। अतः वसीयत की वैकल्पिक व्यवस्था हो जाने पर उन्हें भाजपा छोड़कर हिमस में आना ही होगा।

सावरकरवाद प्रचार सभा, 18/186 टीचर्स कालोनी, बुलन्दशहर

हनुमान जयंती पर्व पर विशेष

विश्वप्रिय वेदानुरागी

हिन्दू समाज की एकता के दो सूत्र हनुमान-चालीसा के आधार पर

१. काँधे मुंज जनेऊ साजे : हनुमान जी के प्रत्येक भक्त को अपने आराध्य, आदर्श की तरह जनेऊ अवश्य पहनना चाहिए। भक्त का अर्थ होता है आज्ञा का पालन करने वाला, जैसे हमारा आदर्श जीवन जीता है वैसा जीवन हम भी जिए। जिस दिन हम सब, परिवार का प्रत्येक सदस्य (स्त्री–पुरुष) जनेऊ पहनने लगेगा तब से धर्म के प्रति दृढ़ आस्था जाग उठेगी, हम सब रक्षक बन जायेंगे। जनेऊ पहनने के बाद हम नित्य–नियमित वेद–पाठ करेंगे जैसे हनुमान जी किया करते थे। चार वेद के पण्डित हनुमान जी की देह जैसे जनेऊ पहनने के कारण सुशोभित रहती थी वैसे हमारी देह भी बन जायेगी क्यों की हम सब व्यायाम भी करेंगे और वैसा ही आहार लेंगे।

२. और देवता चित्त न धरही : गोस्वामी संत तुलसीदास जी ने हनुमान चालीसा में हिन्दू समाज की एकता के लिए एक और सूत्र दिया है जिसके पालन करने मात्र से हम एक शक्ति बन सकते हैं और वो है एक देवता की उपासना। इस पद के दो अर्थ किये जा सकते हैं (१) हनुमान जी जिसका ध्यान करते थे उस ओ३म् का ध्यान, उपासना हम सबको करनी चाहिए, और किसी की नहीं (२) यदि आप मूर्ति पूजा करना ही चाहते हैं तो केवल हनुमान जी की ही पूजा करें और किसी की नहीं।

आज हम देखते हैं की एक्सक्लूसिव–हनुमान जी का मन्दिर बहुत कम देखने को मिलता है। मन्दिर में एक साथ कई–कई देवी–देवता बिठा दिए जाते हैं। मन्दिर ऐसा लगता है जैसे मॉल हो। जैसे माल में हमको खाने के सामान से लेकर श्रृंगार का भी सामान मिल जाता है तो कपड़े से लेकर बर्तन तक मिलते हैं ठीक इसी प्रकार आजकल मन्दिरों में हमको हनुमान जी के साथ शिव, दुर्गा, राम आदि तो ठीक साईं जैसे मुसलमान की भी मूर्ति मिल जाती है। साईं से कई गुना विद्वान आदि–शंकराचार्य जी, सायणाचार्य जी हैं उनको पूजें। (महर्षि–दयानन्द जी को न मानें तो यह समझ में आता है लेकिन यदि मूर्ति पूजा करनी ही है तो इनको तो योग्यता के आधार पर पूजना ही चाहिए, सबसे बढ़िया निराकार की उपासना है लेकिन यदि साकार की करनी है तो फिर उत्तम, विद्वान, योग्य की उपासना करें) ज्ञान–गुण–सागर हनुमान जी के साथ अज्ञानता के प्रतीक, क्रोधी शनि की पूजा की जाती है जो की गलत है इसलिए एक देवता की ही उपासना करें।

हनुमान चालीसा में कहे अनुसार हमको एक देवता की उपासना करनी चाहिए। यदि हम ऐसा करेंगे तो हमें दर–दर भटकना नहीं पड़ेगा। बाबा–शाबा, कब्रिस्तान से लेकर दरगाह, मन्दिर–मन्दिर भटकना नहीं पडेगा। हम सब एक शहर के लोग एक स्थान पर मिलेंगे जिसके कारण संगतिकरण होगा और एक नियम, एक उपासना, एक निर्णय पर आयेंगे।

आइये ! हनुमान जयन्ती को सार्थक करें। उपर्युक्त दो सूत्रों का पालन करें। आर्य समाज की बात न मानें तो समझ आता है लेकिन गोस्वामी संत तुलसीदास जी की बात तो मान ही ली जिये।

❖ ७५–८० प्रतिशत हिन्दू साईं बाबा को पूजता है उस हिन्दू को उसकी पूजा करने से रोकें। आर्य समाज वर्षों से कहता आया लेकिन किसी ने न सुना.....पर अब तो शंकराचार्य जी ने भी कह दिया, कृपा कर उनकी बात मानें ये सबसे बड़ी सेवा होगी।

❖ आज ४० प्रतिशत से अधिक हिन्दू अजमेर के प्रसिद्ध प्राचीन मुर्दे को पूजता है, कभी मटके वाले शाह–पीर को तो कभी आला–दर्जे वाले पीर को तो कभी हाजीपीर को तो कभी हजरत पीर को पूजता रहता है उसे रोके।

❖ आज ४० प्रतिशत हिन्दू अपनी बाहों में या गले में ताबीज बांधे है उसे समझाएं... आर्य समाज आपकी प्रगति में बाधक नहीं साधक है। अपना सच्चा हितैषी समझें, जानें, उसका सहयोग लें।

आर्य समाज के पास एक देवता "ओ३म् है और हम उसी की उपासना करते हैं लेकिन हिन्दू समाज यदि एक बनना चाहता है तो केवल हनुमान जी की ही उपासना करें या हनुमान जी जिसकी उपासना करते थे उसी की उपासना करें।

हनुमान जयन्ती की शुभकामनायें

भगवान महावीर का अवतरण

भारत कुमार काला

इस वर्तमान काल के अंतिम चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर का आज से करीब २६१४ वर्ष पूर्व इस भूतल पर अवतरण हुआ था। भगवान महावीर के अवतरण के २५० वर्ष पूर्व तेईसवें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ का निर्वाण–मोक्ष हो गया था। भ. पार्श्वनार्थ के सामने ही सर्वत्र हिंसा और मिथ्यात्व रूपी धारणाएँ और आचरण में वृद्धि हुई थी। भगवान पार्श्वनाथ ने इस वृद्धि को रोकने का सफल प्रयास किया, परंतु उनके निर्वाण के बाद अधर्म और हिंसाचार ने पुनः स्थान लिया और भारी मात्रा में सर्वत्र इसमें वृद्धि होती गयी। यद्यपि लाखों–लाखों वर्ष पूर्व प्रथम तीर्थंकर के रूप में अवतरित भगवान आदिनाथ के पूर्व से तृतीय काल सुखमा दुखमा काल समाप्त होने से कुछ समय पूर्व से ही मिथ्याभव, आचरण व हिंसाजनक प्रवृत्ति ने जन्म लेना शुरू कर दिया था। इस व्यवस्था को नियंत्रित करने का सफल प्रयास स्वयं भ. आदिनाथ और बाद के तीर्थंकरों ने किया तथापि चतुर्थ काल दुःखमा सुखमा का आरंभ हो जाने से दुखदायी सामग्री धीरे–धीरे बढ़ने लग गयी और सुखरूपी सामग्री शनैः शनैः घटती जा रही थी। भ. आदिनाथ की आयु ८४ लाख वर्ष पूर्व की और ऊँचाई ५०० धनुष्य की थी। वहीं भगवान महावीर की आयु मात्र कुछ कम ७२ वर्ष और ऊँचाई सात हाथ मात्र रह गयी थी। भ. महावीर जब अवतरित हुए तब चतुर्थ काल समाप्त होने के कगार पर था और पंचमकाल दुःखमा काल प्रारंभ होने को था। तब स्वाभाविक ही है कि भ. महावीर के समय में सर्वत्र हिंसा का तांडव फैला हुआ था। मिथ्या मतों की प्रचुरता हो गयी थी। वस्तुस्वरूप, प्रकृति का मूल रूप एक तरह से लुप्त होने के कगार पर था, अहिंसा पूरी तरह से चरमरा गई थी। असंयम, यज्ञादिक आदि ने हिंसा आदि पाप प्रवृत्तियाँ सब तरफ स्थान ले चुकी थीं। ऐसे विचित्र समय में अहिंसा धर्म का सही स्वरूप बताने वाले असामान्य प्रभावशाली व्यक्ति की आवश्यकता अनुभव की जा रही थी। योग्य मार्ग व इसमें स्थिर करने वाले मार्गदर्शक का इंतजार था। भले ही दुःख की व्यप्ति बढ गई थी फिर भी सुख रूपी धर्म पंचम काल के अंतिम समय तक तो रहेगा ही सो उसके लिए श्रेष्ठ निरपेक्ष निपक्ष व्यक्तित्व की उपस्थिति की आवश्यकता थी जो सुयोग्य दिशाबोध दे और भगवान महावीर ऐसी परिस्थिति में इस भूतल पर सुदी तेरस को चौबीसवें अंतिम तीर्थंकर के रूप में अवतरित हुए।

भव तारक, भव्य रक्षक, आत्मश्री जन जन्मांतरों के संस्कारों से इस वसुंधरा को पावन बनाने के मार्ग पर बढ़ती हुई पिछले भव में पुष्पोत्तर विमान में अच्युवेन्द्र के रूप में स्थित आत्मा ने जगत शिशु के रूप में सिद्धार्थ महाराज की रानी त्रिशला के गर्भ मंदिर में आषाढ़ शुक्ल षष्ठी के दिन प्रवेश किया। भगवान महावीर के समय में परिग्रहधारी कुमतों का भारी प्रसार हो गया था। समाज को दिशाहीन हिंसायुक्त मतों ने ग्रसित कर दिया था। लुप्त किए गए अहिंसात्मक जीवन मार्ग को भगवान महावीर ने पुनः प्रसारित किया और समान सम्यग् दिशा जीवन को प्राप्त हुआ। आयु के ३० वर्ष में भ. महावीर ने निर्ग्रंथ दीक्षा ग्रहण की। सम्पूर्ण जीवन ब्रह्मचर्य के रूप में व्यतीत किया। दीक्षा के बाद १२ वर्ष तक तपश्चरण कर आयु के ४२ वर्ष में केवलज्ञान को प्राप्त किया। सर्वज्ञ परम् हितोपदेशी गुणों से भूषित होकर करीब ३० वर्ष तक सर्वत्र भ्रमण कर देश, समाज व व्यक्ति को आत्मकल्याण मार्गोपदेश किया। अहिंसायुक्त जीवन शैली की पुनर्स्थापना की।

भगवान महावीर का जीवन सम्पूर्ण प्रकार से अहिंसा से परिपूर्ण था। उठते, बैठते, चलते–फिरते आदि सब क्रियाओं में हिंसा के यत्किंचित भी स्थान नहीं था। अहिंसा के अवतार भ. महावीर ने प्राणीमात्र को प्रमाद रहित होकर जीवन जीने का पथदर्शन दिया। स्वयं ने पहिले अंगीकार किया। वे तो देवता थे, महान दिव्य पुरुष थे। वे ही अहिंसा योग्य मार्गदर्शन देने के अधिकारी थे। जन–जन को उनका उपदेश बहुत भाया और अपने जीवन पथ को तदनुकूल अहिंसक बनाने के मार्ग को स्वीकार किया। जीयो और जीने दो के सिद्धान्त का कट्टरता से अनुसरण किया। आचार्य समंतभद्र स्वामी भ. महावीर के निर्वाण के करीब ६/७ शताब्दी के बाद ई.सं. दूसरी शताब्दी में हुए हैं। उन्होंने भगवान महावीर द्वारा प्रतिपादित श्रावकों के आचारों के संबंध में जो सारगर्भित अहिंसात्मक जीवन पद्धति का उपदेश दिया है, उसका रत्नकरंड श्रावकाचार नामक ग्रंथ में सुंदर ढंग से सम्पादित किया है। छीना–झपटी, आरोप–प्रत्यारोप, हिंसा की प्रचुरता, सत्ता लोलुपता, भ्रष्टाचार युग–युग में आज के इस उपदेश की बड़ी भारी आवश्यकता है। इतना ही नहीं बल्कि इन उपदेशों का अनुसरण किये बिना जीवन और संमाज तथा विश्व में शांति और सुखी जीवन असंभव है। राग और द्वेष की निवृत्ति के लिए सम्यग् सही चरित्र की आवश्यकता है। किसी के प्रति प्रेम, अनुराग, अपनत्व और किसी के प्रति द्वेष, घृणा, मत्सर इनकी निवृत्ति के बिना जीवन में सुख–शांति आ नहीं सकती। राग और द्वेष यह हिंसात्मक आचरण करने के बाध्य करता है। इन राग और द्वेष की पूर्ति हेतु ही यह जीवन कभी किसी को मारता है या रक्षा करता है, झूठ बोलता है, चोरी करता है, शील नष्ट करता है, परिग्रह का संचय करता है। भूतपूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी जी ने महावीर के जयन्ती शताब्दी महोत्सव के शुभावसर शेष पृष्ठ 11 पर

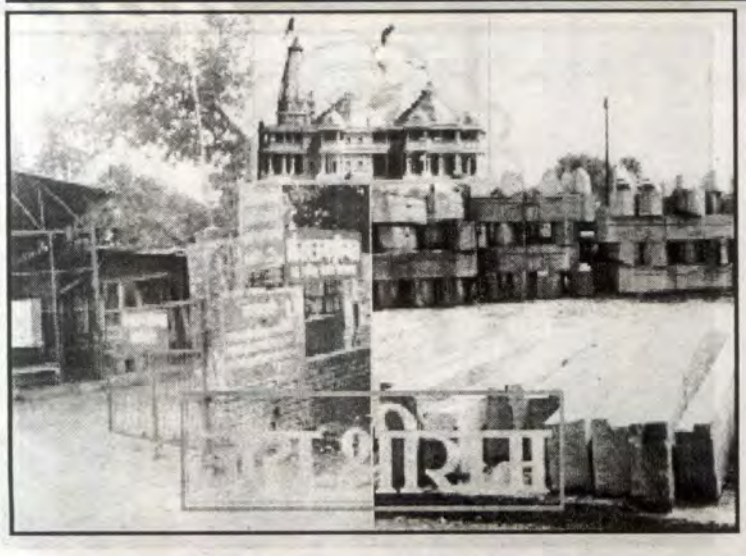

पर किसी भी प्रकार के तुष्टीकरण, भय तथा असमंजस का वातावरण समाप्त होना ही चाहिए।

अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि स्थल पर बाबरी मस्जिद थी या नहीं थी तथा वहाँ कभी नमाज पढ़ी गई थी या नहीं पढ़ी गई थी, इन बातों का कोई नैसर्गिक औचित्य अथवा प्राकृतिक न्याय का आधार ही नहीं बनता है। क्योंकि बाबर का सम्बन्ध अयोध्या से होना तो दूर की बात है, वो तो भारत का ही नहीं था! सर्वविदित दृष्टिकोण है कि 'नमाज कहीं भी पढ़ी जा सकती है अथवा खुदा की इबादत कहीं भी और किसी भी स्थान पर की जा सकती है'। इसी मत के अनुसार कई इस्लामिक राष्ट्रों में मस्जिदों को आवश्यकतानुसार तोड़ा जाता रहा है, आज भी तोड़ा जाता है। मस्जिद में कोई सनातन मंदिर की मूर्ति की भाँति प्राण–प्रतिष्ठित स्थान नहीं होता है। इस्लाम में खुदा को किसी स्थान, भवन या पत्थर के रूप में स्थापित रखना मुसलमानों को इस सामान्य सी बात को समझना होगा कि जैसे "मक्का" में सनातन धर्मावलम्बी दावा करें कि वहाँ का "काबा" कभी शिव मंदिर था अथवा है तथा अब हम वहाँ पुनः पूजा प्रारम्भ करेंगे तो उन्हें कैसे लगेगा? जबकि अनेक ऐसे ऐतिहासिक प्रमाण हैं कि मक्का में कभी मूर्ति पूजा होती थी। यह भी प्रमाणिक है कि "काबा" स्थल से मोहम्मद साहब ने मंदिरों को ही तोड़कर बुतपरस्ती समाप्ति के आहवान के साथ

श्रीराम जन्मभूमि मन्दिर निर्माण मुद्दे पर सुप्रीम कोर्ट के सुझाव पर उठे प्रश्न...?

श्रीराम मंदिर निर्माण ही तर्कसंगत एवं तथ्यपरक एकमात्र वैधानिक समाधान!

भारतीय मुसलमानों के पास असली पूर्वज श्रीराम–श्रीकृष्ण को आदर्श स्वीकारने तथा विदेशी आततायी बाबर की मानसिक दासता से मुक्त होने का अनुपम अवसर

✍ पूनम राजपुराहित "मानवताधर्मी"

श्रीराम जन्मभूमि मंदिर निर्माण मुद्दे पर माननीय सुप्रीम कोर्ट द्वारा दोनों पक्षों को आपसी सहमति बनाकर समाधान करने का आदेश देने के अपने आप में कई महत्त्वपूर्ण अर्थ हैं। इससे यह भी स्पष्ट हो गया है कि यह मुद्दा न केवल जनसाधारण व शासकीय पक्षों के लिए अत्यन्त संवेदनशील व जटिल है, अपितु न्यायपालिका के लिए भी अति ज्वलनशील गंभीरता वाला है। कहीं न कहीं भारतीय न्याय व्यवस्था का शीर्ष मंच सुप्रीम कोर्ट भी अपने संभावित अन्तिम फैसले की स्थिति में दोनों पक्षों में से किसी एक द्वारा अस्वीकार कर देने अथवा फैसले के बाद पैदा हो सकने वाली गंभीर संभावनाओं को लेकर संपूर्ण न्याय व्यवस्था की गरिमा के ही झुलसने को लेकर चिन्तित है।

तथ्यात्मक सच अत्यन्त ज्वलंत व कड़वा है और वो यह है कि 'हिन्दू–मुस्लिम दोनों पक्ष, केंद्र व उत्तर प्रदेश में सत्ता में रहते आये सभी राजनैतिक दल और न्याय व्यवस्था से जुड़े न्यायमूर्ति गण अपने–अपने तत्कालिक समय का दौर निकालते रहने के लिए दोनों पक्षों को समझने व समझाने का चाहे जितना उपक्रम करें परन्तु वो "पानी में लट्ठ मारने" जैसा ही सिद्ध होता रहेगा। जब तक इस अति संवेदनशील ज्वलंत मुद्दे पर शासन और न्यायपालिका राष्ट्र हित सर्वोपरि रखकर कठोर निर्णय नहीं लेगी, तब तक समाधान असंभव है। इस विषय पर न्यायालय का अन्तिम निर्णय कब आयेगा, यह तो भविष्य के गर्भ में है परन्तु उस संभावित निर्णय को लेकर भारत ही नहीं बल्कि समझ रखने वाले पूरे विश्व के किसी जिज्ञासु पक्ष को कोई भ्रम नहीं है कि वो निर्णय क्या होना चाहिए और अन्ततः क्या होगा? स्पष्ट है कि वो निर्णय केवल और केवल विवादित स्थल पर भव्य श्रीराम मंदिर निर्माण का ही हो सकता है!'

अब भारत के हिन्दू–मुस्लिम जनसाधारण, भाजपा–कांग्रेस सहित सभी राजनैतिक दलों और न्यायपालिका के लिए तथ्यपरक गंभीरता को समझते हुए राष्ट्र हित सर्वोपरिता के लिए अन्तिम निर्णायक फैसला लेने का समय आ गया है। देश के समसामयिक समीक्षक एवं समालोचक बुद्धिजीवी तबके तक का मानना है कि 'सुप्रीम कोर्ट द्वारा एक बार पुनः हिन्दू–मुस्लिम दोनों पक्षों को न्यायालय से बाहर समझौते का सुझाव दिया जाना एक प्रकार से न्यायिक तुष्टीकरण और न्यायपालिका में भी फैसले को लेकर कमोबेश भय की स्थिति को इंगित करता है।' न्यायपालिका की यह स्थिति राष्ट्रीय एकता, अखंडता एवं संप्रभुता सम्पन्न व्यवस्थाओं के अनवरत संचालन के भविष्य को लेकर कतई शुभ नहीं कही जा सकती है। अतः अब देश में श्रीराम मन्दिर मुद्दे है कि बाबर आततायी लुटेरे के रूप में भारत आया और वो एक क्रूर विदेशी आक्रमणकारी था। ऐसे में भारत की अस्मिता, सांस्कृतिक मूल्यों एवं भारत के महान मानव कल्याणकारी सामाजिक व सांस्कृतिक विरासत को विध्वंस करने वाले उस जैसे आक्रमणकारी को आदर्श बनाकर उसकी समृति में कुछ भी बनाये जाने अथवा बनाये रखे जाने का हठ करना खुला राष्ट्रघात नहीं है, तो क्या है?

श्रीराम जन्मभूमि मंदिर स्थान पर किसी काल खंड में मुसलमानों के इबादत स्थल होने के बेमानी कुतर्क देने वालों को यह समझना अत्यन्त जरूरी है कि 'प्रथम तो उनका दावा श्रीराम के जन्म से पूर्व का नहीं होकर बहुत बाद का है, दूसरा अयोध्या में उनका बाबर के बारे में कोई भी दावा श्रीराम जन्म के दावे से अधिक मजबूत नहीं हो सकता है, तीसरा अब तक के सभी पुरातत्त्व प्रमाण भी वहाँ मंदिर होने के मिले हैं और चौथा कई मुसलमान इतिहासकारों के मत अनुसार भी बाबर द्वारा मंदिर तोड़कर ही मस्जिद बनाने का उल्लेख मिलता है। अर्थात स्पष्ट है कि वहाँ कभी जबरन मस्जिद बनाई गई थी और वो मस्जिद बनाना अनुचित था एवं गंभीर अपराध था। जहाँ तक मुसलमान अपनी धार्मिक पूजा पद्धति के अधिकार की भी बात करते हैं तो भी इस्लाम का स्पष्ट अनिवार्य नहीं बताया गया है। ऐसे में मुसलमानों का श्रीराम जन्मभूमि स्थल पर ही मस्जिद बनाने का जिद उनके कट्टर वैमनस्य भरी मानसिकता का जीवंत उदाहरण ही कहा जा सकता है।

भौगोलिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, सामाजिक एवं व्यावहारिक सभी दृष्टिकोण के साथ–साथ प्राकृतिक न्याय का सहज प्रवाह भी यही बनता है कि 'अयोध्या में भव्य श्रीराम मंदिर का निर्माण हो और केवल यही कार्य है जो वहाँ किया जा सकता है। भगवान श्रीराम के होने या न होने पर किसी प्रकार का प्रश्न चिन्ह नहीं लगाया जा सकता है और उनका जन्म अयोध्या में हुआ वो भी उतना ही निर्विवाद सत्य है। ऐसे में स्पष्ट है कि भगवान श्रीराम का मंदिर निर्माण होना ही स्वाभाविक रूप से तर्कसंगत, प्रमाणिक एवं तथ्यपरक एकमात्र समाधान है और सनातन धर्मावलम्बियों का वैधानिक अधिकार भी!'

एक बार पुनः सुप्रीम कोर्ट द्वारा दोनों पक्षों को न्यायालय से बाहर आपसी समझौते का निर्देश देना भारत के मुसलमानों के पास अपनी कट्टर वैमन्य भरी मानसिकता वाली छवि को धोने का अनुपम अवसर बनकर आया है। भारतीय मुसलमान इस मुद्दे पर अपने अब तक के गलत रवैये अर्थात बाबर जैसे विध्वंसक को आदर्श मानने की जाती रही भयंकर भूल को सुधार सकते हैं। वर्तमान इस्लामी स्वरूप की स्थापना की थी। इस मक्का की घटना को तो महज कुल १४ सौ वर्ष से कुछ अधिक समय मात्र हुआ है, जबकि अयोध्या में भगवान श्रीराम का जन्मकाल सबसे पुरातन मानव सभ्यता होने के अनेकानेक वैश्विक प्रमाण उपस्थित हैं।

जब मात्र १४ सौ वर्ष पुराने मक्का के "काबा" पर कोई भी अन्य धर्मावलम्बी मोहम्मद साहब से पूर्व काल जैसी अवस्था बहाली की बात नहीं करता है। मक्का में कभी मूर्ति पूजा होती थी, यह सत्य होने के बाद भी वर्तमान संदर्भों में हमारा मानना है कि विश्व शांति के लिए वहाँ मूर्ति पूजा की बात अथवा माँग नहीं की जानी चाहिए। ऐसे में गंभीर प्रश्न उठता है कि 'क्या भारतीय मुसलमानों को एक विदेशी आतंककारी द्वारा कुछ सौ वर्षों पूर्व श्रीराम मंदिर तोड़कर बनाये मस्जिदनुमा खंडहर के लिए बहुसंख्यक हिन्दुओं की भावनाओं से खिलवाड़ करते रहना चाहिए तथा शासन, समाज और न्याय व्यवस्था को उन्हें लगातार ऐसा करते रहने देना चाहिए? अब बाबर समर्थक मुसलमानों को सत्य समझना ही चाहिए अन्यथा व्यवस्था के किसी न किसी पक्ष को समझाना ही होगा कि '१९९२ में बाबर के आतंक की निशानी मस्जिदनुमा खंडहर को भी देश के सहज जनभावना प्रवाह ने तोड़कर पुनः शेष पृष्ठ 10 पर

शशि थरूर की दृष्टि में रोजगार का अर्थ

डॉ० कुलदीप चन्द अग्निहोत्री

रोजगार किसको कहा जाए इसको लेकर एक नई बहस देश भर में छिड़ गई है। सोनिया कांग्रेस के एक दिग्गज शशि थरूर के इस मामले में कूद पड़ने से बहस और भी ज़यादा तूल पकड़ गई है। इतना हल्ला सुनन्दा पुष्कर के मामले को लेकर नहीं हुआ था जितना एक आम आदमी द्वारा पकौड़े की दुकान से अपना रोजगार चलाने को लेकर हो गया है। प्रसंग भाजपा के इस वायदे का था कि देश भर में रोजगार के नए अवसर सृजित किए जाएँगे। किसी सम्वाददाता ने इसके बारे में प्रधानमंत्री से पूछा लिया कि कितने लोगों को रोजगार मिला है? भाव कुछ ऐसा था कि सरकार ने कितने लोगों को नौकरियाँ दी हैं? प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रोजगार और उसके अवसर सृजित होने की व्याख्या करते हुए कहा कि टैलीविजन स्टूडियो के सामने जिस व्यक्ति ने अपनी पकौड़े तलने वाली रेहडी लगा ली है, उसे भी रोजगार में ही गिना जाएगा। रोजगार की इस व्याख्या को लेकर सोनिया कांग्रेस ने बहुत सख्त एतराज जताया। कांग्रेस के बुद्धिजीवियों के सरगना शशि थरूर इससे बहुत ही व्यथित हुए। उनके दूसरे साथी पी चिदम्बरम जो पूर्व में वित्त मंत्री भी रह चुके हैं का तो कहना है कि यदि रेहडी लगाना और उस पर पकौड़े तल कर बेचना रोजगार है तब तो भिक्षा मांगना भी रोजगार ही माना जाना चाहिए। ये दोनों सज्जन सोनिया गांधी कांग्रेस के चिन्तन और विचार का प्रतिनिधित्व करते हैं, ऐसा माना जाता है। शशि थरूर रोजगार की इस अवधारणा का उपहास उड़ाते हैं। पकौड़े तल कर बेचना, उनकी दृष्टि में ऐसी तुच्छ चीज है जिसे रोजगार तो किसी लिहाज से भी नहीं माना जा सकता। बहुत पहले जब उनसे किसी ने पूछा था कि जो यात्री हवाई जहाज की बिजनेस क्लास में सफर नहीं करते बल्कि एकोनिमी दर्जा में सफर करते हैं, उनको आप क्या कहेंगे। उन्होंने ऐसे यात्रियों को कैटल क्लास कहा था। यानि यह दर्जा तो पशुओं के दर्जे के बराबर है। जो लोग एकोनिमी दर्जा में सफर करते हैं वे पशु के समान हैं और पशुओं के लिए यही दर्जा उपयुक्त है। हवाई जहाज में सफर करने वाला आदमी, यदि वह पहली तीन सीटों पर नहीं बैठा है, शशि थरूर के लिहाज से पशु के समान है तो अपनी रेहडी पर पकौड़े तल कर बेचने वाले आदमी की उनकी दृष्टि में क्या औकात हो सकती है? जब उस आदमी की ही औकात नहीं तो उस द्वारा किए जाने वाले काम को रोजगार कैसे मान लिया जाए? किसी भलेमानुस ने बैंक से दस हजार उधार लिए और अपनी रेहडी खरीद कर पकौड़े तलने लगा और अपने परिवार का पेट पालने लगा, इससे घटिया काम शशि थरूरों की दृष्टि में और कोई नहीं हो सकता। ध्यान रहे यहाँ शशि थरूर व्यक्ति वाचक संज्ञा नहीं है, बल्कि एक मानसिकता का नाम है, जो अपने जैसे अनेक लोगों के मानस को उघाड़ कर रख देती है। शशि थरूर ने खुले और जो बाहर अपनी रेहडी पर पकौड़े तल कर बेच रहा है, वह केवल बेरोजगार ही नहीं बल्कि थरूरों की हिकारत को भी झेलता है। थरूर को शायद पकौडे तले जाने पर एतराज नहीं है, उनका असली एतराज है कि हल्दी राम के यहाँ जाकर पकौड़े तलो, केऐफई वालों के जाकर पकौड़े तलो, किसी बड़े नाम वाले होटल

तौर पर अपने भीतर को नंगा कर दिया है, इसलिए पकड़े गए हैं। शेष इन जैसे अनेकों, पकौड़े तलने वाले आम आदमी को अपना रोजगार चलाते देख कर हिकारत से नाकमुंह सिकोड़ लेते हैं और भाग कर साथ लगते किसी मैकडोनालड में घुस पर अपनी भूख और प्यास मिटाते हैं। मैकडोनालड में जो लड़का, वर्दी पहन पर उनकी प्लेटें उठा रहा होता है और सनैक्स तल रहा होता है, वह इन थरूरों की दृष्टि में रोजगार में लगा हुआ है लेकिन उसी अन्दर वाले लड़के का दूसरा भाई बाहर मजे से अपनी रेहडी पर पकौड़े तल रहा होता है, वह बेरोजगार है। फर्क केवल इतना ही है कि अन्दर बाला नौकरी कर रहा होता है और बाहर वाला अपना मालिक खुद है।

अंग्रेजों ने लम्बे अरसे तक इस देश पर राज करने के बाद एक बात कुछ लोगों के दिमाग में घुसा दी है कि रोजगार में वही है जो उनके शासन की नौकरी बजा रहा है। जो अंग्रेजों के शासन की नौकरी बजा रहा है वह एक प्रकार से उनकी सरकार का हिस्सा बन गया है। जाहिर है जो उनकी शासन का हिस्सा बना है उसे सम्मान देना उनकी रणनीति का हिस्सा रहा था। जो उनकी सरकार का हिस्सा नहीं बना, उसे उन्होंने हिकारत की नजर से देखा। शशि थरूर जैसे अनेकों प्राणी अभी तक मानसिक रूप से उसी विरासत को ढो रहे हैं। जो सरकारी कैंटीन में पकौड़े तल रहा है, वह रोजगार में है वाले की ताबेदारी में पकौडे तलो। तुम्हारी इतनी हिम्मत की कि अपने मालिक खुद बन रहे हो। ताबेदारी में रहना सीखो। नरेन्द्र मोदी देश के युवा को ताबेदारी से मुक्त कर उसे मालिक बनाना चाहते हैं। चिदम्बरमों और थरूरों को यही बात चुभती है। शताब्दियों की गुलामी का असर जाते जाते भी वक्त तो लेगा ही।

यह अपनी अपनी समझ और दृष्टि का मामला है। एक व्यक्ति नौकरी छोड़ कर अपनी छोटी सी दुकान खोल लेता है तो थरूर जैसे लोगों की दृष्टि में वह बेकार हो गया है। उस पर तरस खाया जा सकता है। यदि वही व्यक्ति कल अपनी दुकान बन्द करके किसी बड़े माल में मालिक का वही सामना बेचना शुरु कर देता है, तो थरूरों के लिहाज से अब उसको रोजगार मिल गया है। यह दृष्टि आत्म विश्वास की कमी से पैदा हुई है। इस दृष्टि में सड़कों पर खुले ढाबे कैटल क्लास के लिए हैं और इनका रोजगार से क्या लेना देना? यदि यही ढाबे वाला अपना ढाबा बन्द कर बगल में ही और किसी बड़े नाम से चल रहे होटल में पकौड़े तलने का काम शुरु कर देता है, तो वह रोजगार में शामिल हो जाएगा। काम वह एक ही करता था। पहले वह अपने ढाबे में पकौडे तल रहा था और अब वह किसी दूसरे के ढाबे में पकौड़े तल रहा है। थरूर की दृष्टि में पहले वह दया का पात्र था और बेरोजगार था लेकिन दूसरे के होटल में पकौड़े तल कर वह रोजगार पा गया है।

लेकिन एक और संभावना पर विचार करना भी ठीक रहेगा। यदि मोदी जी पकौड़े की जगह सनैक्स शब्द का प्रयोग कर लेते तो मामला बन सकता था। रेहडी की जगह भी अंग्रेजी का कोई भारी भरकम शब्द प्रयोग होना ही चाहिए था। हमारे देश में रोजगार की परिभाषा, भाषा से भी जुड़ी हुई है। वाक्य कुछ इस प्रकार का होना चाहिए था—जो फ्रैश सनैक्स तैयार करके सप्लाई करता है, उसे भी रोजगार सृजित हुआ है, ऐसा माना जाना चाहिए। तब शशि थरूर उसे यकीनन रोजगार स्वीकार कर लेते। वह भुनी हुई मक्की बेच रहा है या पौप कार्न बेच रहा है, इससे भी जमीन आसमान का फर्क पड़ जाता है। माल दोनों का एक ही होता है लेकिन बेचने की शैली अलग होती है। शशि थरूर शैली के दीवाने हैं, माल चाहे कितना भी बासी क्यों न हो। लेकिन उधर नरेन्द्र मोदी को शैली की चिन्ता नहीं है, माला ताजा होना चाहिए। इसलिए मोदी के ताजे माल को शशि थरूर रोजगार नहीं मान सकते। उनके लिहाज से सुरक्षा परिषद में सचिव बन जाना ही रोजगार है और न बन पाना बेरोजगारी है। जो लोग अपनी मेहनत से, ईमानदारी से काम करते हैं, उसे थरूर जैसे लोग बेकार और तुच्छ मानते हैं। लेकिन दुर्भाग्य से शशि थरूर और पी चिदम्बरम की पार्टी केवल एक ही कौशल जानती है और वह कौशल है कोयले की खदानों के आवंटन की दलाली का। चारा घोटाले का, बोफोर्स घोटाले का। जीपों का मूंदड़ा कांड तो कांग्रेसी शासन के शुरु में ही चल पड़ा था। उनकी दृष्टि में असली रोजगार तो यही है। अब ऐसे लोग न तो रेहडी लगा कर आजीविका कमाने वाले को कैटल क्लास से ज्यादा मानेंगे और न ही उसके इस काम को रोजगार। उधर मोदी हैं कि वे चारा घोटाले वाला, कोयला खदानों के आवंटन की दलाली वाला रोजगार खत्म करने पर आमादा हैं। मोदी के आने से मनसबदाकियां उखड रही हैं, दरबारों में से तीसहजारिए, बीसहजारिए, लखटकिया बेरोजगार हो रहे हैं। इस एक कौशल के सिवा और कोई कौशल उन्हें आता नहीं है। शशि थरूरों को समझ लेना चाहिए जिनको वे कैटल क्लास समझते थे अब उन का युग आ गया है। अब उनके कौशल से रोजगार सृजित होगा। उन्हीं की प्रतिष्ठा होगी।

लेकिन शशि थरूर के मित्र और कांग्रेस के अर्थशास्त्री पी चिदम्बरम तो उनसे भी दो कदम आगे जाते हैं। उनका कहना है कि यदि अपनी रेहडी पर पकौड़े तल कर बेचना भी रोजगार की श्रेणी में आता है तब तो भिक्षा माँगना भी रोजगार ही मानना चाहिए। वैसे तो चिदम्बरम कुछ सीमा तक सच ही बोल रहे हैं। चिदम्बरम की पार्टी ने पिछले सात दशकों में देश में इसी प्रकार का रोजगार पैदा किया है। देश के युवा के आत्म विश्वास को खंडित किया है। वह स्वयं अपने बलबूते कुछ कर सकता है, यह भाव उसमें पैदा ही नहीं होने दिया। यही कारण है कि वह तमाम योग्यता होते हुए भी सरकारी/अर्ध सरकारी नौकरी पाने के लिए किसी न किसी राजनैतिक नेता के पीछे भागा रहता है। राजनेताओं के पीछे पशु बन कर भागता देश का युवा ही कांग्रेस की असली ताकत रही है। चिदम्बरम जानते थे कि यदि युवा ने भागना बन्द कर दिया और स्वयं अपने पैरों पर खडे होने का प्रयास शुरु कर दिया तो उनकी पार्टी की ताकत तो खत्म हो जाएगी। नरेन्द्र मोदी ने देश का खोया आत्म विश्वास लौटाने का ही प्रयास किया है। रोजगार का मतलब केवल सरकारी नौकरी न हो कर अपने पैरों खड़ा हो पाने की क्षमता विकसित करना है। कौशल प्रशिक्षण इसी का नाम है। ताजा पकौड़े तल कर बेचना भी कोई कम जीवट का काम नहीं है। उसके लिए भी कौशल चाहिए। देश के परम्परागत काम धन्धों को आधुनिक तकनीक का लाभ देकर उसे बल प्रदान करना ही रोजगार के क्षेत्र में स्वाबलम्बी बनाना है। यही शासन का सबसे बड़ा कौशल है। नरेन्द्र मोदी इसी दिशा में सक्रिय हैं। भारत के लोगों में अपने कौशल को आधुनिक तकनीक से जोड़कर युग के साथ चलने की समझ विद्यमान है। पंजाब के मालवा में जाकर देख लेना चाहिए के किसानों ने अपने छकडों पर ईंजन लगा कर उन्हें मारूति की जगह मारूता का नाम देकर सड़कों पर दौड़ा दिया है। देश दौड़ने लगा है। एक दिन ये पकौडे वाले ही चिदम्बरमों की गर्दन पकड लेंगे। पकौड़ा प्रतीक है। शशि थरूर और चिदम्बरम भी इसे अच्छी तरह जानते हैं लेकिन जान बूझकर कर देश को भ्रमित करने और कांग्रेस की गर्दन छुड़ाने का प्रयास कर रहे हैं।

पुणे का शनिवारवाड़ा

रमेश जि. नेवसे

(शेष पिछले अंक का)

शनिवारवाडे में

पेशवाओं के कालमें शनिवारवाडे में अनगिनत घटनाएँ घटी। उनमे से कुछ गिनीचूनी घटनाएँ, प्रसंग इतिहास प्रेमी लोंगो के लिये...

विजया दशमी - दशहरा

दशहरा यह मराठोंका राष्ट्रीय त्योहार है। दूसरे बाजीराव पेशवा के कार्यकाल में यह त्योहार पुणे में जिस तरह से मनाए जाता था, इसका सुंदर वर्णन सर जॉन माल्कम ने किया है।

इस दिन पेशवा अपने सरदार तथा सिपाहियों को साथ लेकर शहर के बाहर लष्करी छावणीपर जाते थे। हर घुडसवार के पास उसका खुद का झंडा रहता था। उँची नस्लके घोडे पर सवार होता था। नये कपडे पहनकर सरपर साफा बांधता था। तेज किए शस्त्र हाथ मे लेता था। घोडे, हाथी, उँट सजाए जाते थे। इस जुलूस में शहर के सभी नागरिक शामिल हो जाते थे। बादमे यह जुलूस ढोल, नगाडे आदि वाद्य बजाते हुए शमी वृक्षके पास पहुँच जाते। पेशवा विधीवत शमी वृक्षकी पूजा करते। बाद में उस वृक्षके कुछ पत्ते तोडते।

उसके बाद तोपे तथा बंदूकों से सलामी दी जाती। आसमान मे बाण छोडे जाते थे। बंदूको से बार किये जाते थे। जुलस मे शामील सरदार, व्यापारी, साऊकार और बडीबडी हस्तियाँ हाथ लगे पौधों को निकाल लेते थे। और जुलूस वापस आता। सीमाल्लघन से लौटने के बाद पेशवा दरबार बुलाते थे।

पेशवा दरबार में बैठते और योग्यतानुसार पोशाक देकर हस्तियों को सम्मानित करते। इसवी १७६४ में इस पोशाकोको के लिए २,२०,१४४ रुपए खर्च हुये। ये पोशाक जिन्हे दिए गए उसमे सातार के महाराज, पंत प्रतिनिधी, पंत सचिव, दौलतराव शिंदे, तुकोजी पवार पक्तियाँ थी।

एक अवलोकन

इसवी १८१८ में फिटझ क्लोरेन्स ने गौण रिसिडेंट मि. क्रोटस् के साथ शनिवारवाडा देखा था। वाडा पूरा निर्जन था। क्योकि द्वितीय पेशवा बाजीराव वाडा छोड भाग गऐ थे। और ब्रिटिशों ने वाडे पर अपना कब्जा किया था। शुरू मे कुछ दिनके लिए रेसिडेंट एलिफिस्टन ने शनिवारवाडे के दिल्ली दरवाजे को ताला लगवाकर वह वास्तू सील की थी। फिटझ ने लिख रखा है.....

अंदर के चौक के (क्र. ३०) दीवारो के उपर देवी देवताओं के साथ घुडसवार आदि चित्र खिचे हुए है। वाडे मे बडा चौक याने क्र. २६ पुष्करणी चौक बहुत बडा था। नागपूरकर तथा भोसले के वाडे के चौक भी बडा और सुंदर था। दूसरे बाजीराव पेशवे विशेष प्रसंगसे ही वाडेमे आते है।

जिससे व्यवस्थाहीनता दिखाई देती है।

एक सुंदर दालन में मार्किस वेलस्लीकी आदमकद तसवीर टंगी हुयी है। दो रंगीन ग्लोब–खगोल–भूगोल उसे उपर लॅटिन भाषा में कुछ लिखावट थी। क्षितीज बतानेवाली पट्टीया रूपेकी थी। १७८८ में इंग्लैंडके राजा ने पेशवाको ये ग्लोब भेट दिया था। जिसके उपर पुरी दुनियाका नक्शा छपवाया था। गणपती महाल की छत लकडीकी तथा गोलाकार थी। इस दालानकी लंबाई ५० फीट है। उसकी उंचाई काफी थी। यहाँ अंग्रेजी बिल्लोरी झुमर लगवाए है।

पेशवाओं की मूल्यवान चीजों को कपडो से ढक्कर रखा है। बाडे में एक बहुत बडी घडी थी। जो सही वक्त बता रही थी। एक हॉलमे चित्रो से सजी अनेक अंग्रेजी किताबे थी। पास ही एक खगोल यंत्र टूटा हुआ पडा था। जिसमे सूर्यग्रहमाला आदि यथास्थित बतायी गयी थी। पुणे के किसी देशी नक्शाकार ने एक नक्शा बनवाया था। वह एक जगहँ चिपकाया था।

घडी

प्रथम बाजीराव पेशवे कार्यकाल मे इसवी १७३५ सपने कप्टन बॅंकर उसे लिखे हुये खत से पता चलता है कि, उस कॅप्टनने बाजीराव पेशवे की बंद घडी ठीक की थी। इस से यह स्पष्ट होता है कि प्रथम बाजीराव पेशवे के समय शनिवारवाडे मे घड़ी थी।

पेशवा ने खुद के लिए २७७० रुपयों में तीन घडियाँ खरीदी थी। उनमें से एक घडी ६३५ रुपयों की और दूसरी १६६१.५० रुपयों की थी। पहले घडी की पेशवा दफ्त में उल्लेख इस प्रकार है। तीन सुईयोवाली, चार तारकी सॉकलवाली घडी, जिसके एक छोरमे छोटीसी घंटी, उसके साथ एक अत्तरदानी और घडी के लिये तांबे की चावी, जिसकी किमत ६३५ रुपये थी।

डॉक्टर

पेशवाने १७७० इसवीमें ठाणे जिले के, रेवदंडा बंदर से एक डॉक्टर बुलाकर हर माह १५० रुपये तनख्वह देकर उसे अपने दरबार में रखा था।

गोकाक दीवानखाना

पेशवे कालमे गोकाक चित्रकारी जोरशोर में थी। शनिवारवाडे में गोकाक शैलीमें महान और नामी चित्रकारोंके चित्रकला के नमुने लगाये गए थे। ये सारे चित्र जहाँ लगवाये गये थे। उसे गोकाक दीवानखाना कहते थे।

माधवराव पेशवा के राजकाल में उनके महल की शोभा बढाने के लिय इसवी १७६४ साल में रागमाला के आधारपर बनवाए गए ३६ चित्र कुल ११५ रुपयो में खरीदे थे।

कॅमेरा

पेशवाओं के ऐतिहासिक दस्ताऐवज क्र. ३२ मे एक सुंदरनुमी कॅमेरेकी टिप्पणी प्राप्त हुई है। यह टिप्पणी इसवी १७६५ सन की है। मीर अनवर को निवंती कि, छाव देखाकर तसबीर निकालनेवाली संदूक जो अंग्रेजोसे मंगवाई थी। वह सरकार की मांग के अनुसार। इसकी छान बीन करके नवलोजी चव्हाण के साथ आप के लिए भेजी है। वह प्राप्त होने पर रसीद दे और संदूक सरकार में जमा कराएँ। उसकी खर्ची अंग्रेजो के नाम लिखी है।

छोटे पेशवा की खुशी मे

जब नारायणराव पेशवे का शनिवारवाडे मे सत्ता की लौलसा से इसवी ३०–८–१७७३ सन में कत्ल हुआ था। तब उसकी पत्नी गंगाबाई तीन माह की गर्भवती थी। पेशवा के दीवान नाना फडणवीस और अन्य ग्यारह सरदारो ने गंगाबाई ने बच्चे को जन्म दिया। पेशवा के गद्दीको वारिस मिल गया। इस पूरी घटना को इतिहास में बारभाई का कारस्थान कहते थे।

पुरंदर कीले के आस पास से सासवड, बारामती, सुपा, फलटण, वाई आदि गावो से और ठाणेसे लगभग सात आठ जार औरते हेल निकालने के लिये आयी थी। इस शुभ अवसर पर हेलकरणी को पेशवा की और से साडी चोली भेट की गयी थी। इसी कारण वश पुणे में शनिवारवाडे के दिल्ली दरवाजे पर दस हजार औरतो ने पानी का घडे फेरकर हेलल निकालकर साडी चोली प्राप्त की थी। लगातार दसबाराह दिन तक यह सिलसिला जारी थी।

फड

पेशवावो ने बनवायी हुयी हिसाब किताब रखनेकी पद्धति पुरे हिंदुस्तान में आज भी सराही जाती है। उसकी नीव शनिवारवाडे में नानासाब पेशवाने डाली थी। उन्हे दीवान नाना फडणवीस की सहाययता इस काम में मिली थी। इस पद्धति को आकर देने के, उसे अनुशासित बनाने ने नये तौर तरीके नाना ने ढूढ निकाले थे। १७५० के आसपास शनिवारवाडे में हिसाब किताब की कचहरी जिसे पेशवाई मे 'फड' कहा जाता था, उसकी शुरुआत हुयी। १८९८ साल में अंग्रेजो ने पेशवाई परास्त की। उस वक्त शनिवारवाडे में हिसाब किताब के इस फडमे २०० क्लर्क और कई अधिकारी थे।

संपत्ति

इसवी १८१७ में मराठो की हार होते हुए देखकर दूसरा बाजीराव पेशवा पुणे से भाग निकला। एलफिस्टन अंग्रेजो का रेसिडेंट होते हुये भी बाजीराव का दोस्त भी था। उसकी कुछ जिम्मेवारीयाँ थी। उसने बाजीराव को सलाह दी थी कि अगले कुछ दिनो मे अंग्रेज आपकी सारी संपत्ती पर कब्जा करनेवाले है। जितना आपको यहाँ से ले जाना है, ले जाइए। यह आखरी मौका है।

दूसरे बाजीराव ने अपने सारे महलो से संपत्ति इकट्ठा की और जवाहरात, गहने, सोना, चांदी, चांदी के बर्तन, चांदी सोने की अनेक प्रकार की मूर्तीयाँ इ. १४ हाथियो पर लादकर खजाने का सारा पैसा दूसरे १४ हाथियो पर लादकर कुल सारी संपत्ति २८ हाथीपर लादकर भाग निकला। लेकिन उसे शनिवारवाडे से एक भी चीज उठाकर ले जाना अच्छा नही लगा। २८ हाथियों पर लादी सारी संपत्ती उसकी नीजी थी। उस जमाने की इस संपत्ति की कीमत आज के समय में कितने की होगी... बैठे बैठे आप सोच सकते है।

संजोग

बालाजी विश्वनाथ भट ने स्वपराक्रम से और अपने बुद्धीचातुर्य से छत्रपती शाहू का विश्वास प्राप्त कर पेशवे पद हासिल किया था। और भट घराणे को विरासत के रूप में पेशवेपद दिलाया था। वही पेशवाई नष्ट करने के लिए बालाजी याने बालाजीपंत नातू ने अंग्रेजो की सहायता की थी। इसी बालाजी पंतने द्वितीय बाजारीव अपनी जान बचाने के लिए शनिवारवाडा छोड़कर भाग जाने के बाद, १७ नवंबर १८१७ में शनिवारवाडे के नौबतखाने के उपर २५ सैनिको के साथ युनियन जैक लहराया था। **समाप्त**

वादी से रिसता प्रेम का कहवा

✍ डॉ० अर्पण जैन

जब भी प्रेम के गीतों का बखान होगा, जाफरान की तासीर का तरन्नुम बनेगा, कश्यप की धरती का गुणगान होगा, शंकराचार्य की जुबानी कही जाएगी, लालचौक से क्रांति सूत्र माँगा जायेगा, डलझील से टपकते पानी की बात होगी, शिकारों और तैरने वाले घर (हाउस बोट) की सर्द रातों को याद किया जायेगा, चश्मे शाही में पत्थरों से रिसते पानी की चाह होगी, मुगल गार्डन को जेहन में उतारा जायेगा, विश्व विद्यालय से शिक्षा की अजान होगी, फूलों के महकने को जब जीवन में उतरता देखा जायेगा, तब बेशक वादी की बर्फ से लेकर कहवे की महक का जायका लेकर कश्मीर की क्यारियों को ही याद किया जायेगा।

हाँ मैं अब तक उसी कहवे के स्वाद में खोया हूँ जिसने अनजान से शहर श्रीनगर में नए रिश्तों को बना कर मुझे तन्हा नहीं होने दिया। और हाँ सबसे खास बात कभी न भूल पाने वाले पलों में एक वादी का वो प्यार भी हैं जो मुझे हमेशा कश्मीर की तरफ खीचने के लिए काफी हैं। बहुत कुछ सुना था, इंदौर से दिल्ली तक की यात्रा में कश्मीर के बारे में, पेशे से पत्रकार होने के कारण बहुत कुछ लिखा हुआ ही पढ़ पाया था घाटी के सौन्दर्य के बारे में और हालातों का वही रोजमर्रा वाला हालचाल जो सियासत दुनिया को दिखाना चाहती हैं। पर दिल्ली से श्रीनगर की महज १ घंटा ४० मिनिट की उड़ान के बाद जो आँखों से कश्मीर को देखा और जाना वो कही अलग था। कमोबेश मैं विश्वास ही नहीं कर पा रहा था कि क्या मैं वाकई कश्मीर में ही उतरा हूँ या फिर कहीं और। क्योंकि कश्मीर के बारे में जो सुना या पढ़ा वो सब कोरी हवा हवाई ही थी। क्योंकि वादी के निश्चल प्रेम और मिठास के साथ अपनेपन के भाव को कोई शायद नहीं लिख पाया हो।

बहरहाल वादी में सिमटी हुई जाफरान की खुश्बू अभी भी हिंदुस्तान के दिल तक नहीं पहुँच पाई इसका मलाल हैं मुझे और उन तमाम बुद्धिजीवियों से अपेक्षाएं भी है कि कम से कम वादी को लगी सियासी नजर का टोटका भी करवा दो ताकि गुलजार हो जाये केशर की क्यारियां।

श्रीनगर का टीआरसी (टूरिस्ट रिसेप्शन सेंटर) जहाँ जम्मू जाने वाली टेक्सियों का अम्बार–सा लगा हुआ रहता हैं फिर चाहे समय रात की बारह क्यों ना हो, वही हमारा रुकना हुआ जहाँ से बमुश्किल कदम पर डल गेट है। हम में शामिल हैं मेरा मातृभाषा परिवार जिनमे मेरे साथी अजय जैन 'विकल्प' जी और डॉ० प्रीति सुराना जी। हाँ मैं से हम हो जाना ही जिंदगी का असली मजा हैं। वादी की वो ठण्डी शाम जो सूरज को विदा करके चांदनी के घर में हमें खींच लाती हैं जहाँ सर्दी से बचने के लिए एक इलेक्ट्रीक कम्बल बिस्तर पर हमारा इंतजार कर रहा होता है और कमरे में लगा रूम हीटर हमें मुहं चिड़ा रहा होता हैं। इन्ही सब के बीच तापमान का अचानक से डिग्री हो जाना भी बहुत याद आता हैं। खैर शाम हुई हमें शाकाहारी भोजन को ढूंढने की जहमत नहीं उठानी पड़ी क्योंकि मेजबान कम दिल अजीज जिनसे पहली मुलाकात करने के बाद से ही अपनापन लगने लगा, हाँ नसरीन अली जी ने हमें पहले ही सारे ठिकानों की जानकारी दे दी थी जहाँ शाकाहारी भोजन मिलता हैं। डल गेट जाने के लिए हमने टेक्सी वाले को रोका और इन्दौरी आदतन हमने भाड़े को लेकर थोड़ा सा मोल–भाव करना चाहा किन्तु उस बुजुर्ग टेक्सी ड्रायवर ददू की एक बात दिल के इतने गहरे उतर गई कि उसके बाद हम निशब्द ही हो गए। हाँ उन्होंने कहा कि 'आप तो मेहमान हैं और मैं आपसे वही दाम लूँगा जो आप दिल से देना चाहेंगे। क्योंकि मेहमान का दिल तोड़ने की कश्मीरी रवायत नहीं....

इन्ही सब जद्दोहद के बाद रात का तीसरा प्रहर आ जाना जहाँ निंदिया रानी का दुबक कर कहना कि सो जाओं वरना सुबह टैगौर हाल में होने वाले आयोजन के लिए समय से नहीं पहुँच पाओंगे। दिमाग अभी भी वही कसरत कर रहा था कि आखिर विमानतल से टीआरसी तक पहुंचने वाले पुरे रास्तें को हिन्दुस्तानी फौज ने क्यों घेरे रखा हैं? क्या वाकई कश्मीर को जरुरत हैं इन फौजी लामबंदी की?

कश्मीर पर सियासत की इतनी गहरी सोच है कि जिसे बर्फ के मानिंद पिगलने की उम्मीद भी करना स्वयं को निश्चल पागलपन में डूबना होगा। खैर सर्द रात ने ख्यालों की कम्बल ओड़ा कर नींद की आगोश में ले ही लिया और फिर हम सीधे ६ बजे सो कर उठे जबकि १० बजे हमें टैगौर हाल पहुंचना था जहाँ हमारी हिन्दी माँ अपनी बहन उर्दू के घर हमारा इंतजार कर रही थी। बहन के बच्चों का सम्मान जो होना था। हम थोड़ा विलम्ब से पहुंचे लगभग आधा घंटा। और इसी बीच मेरे अजीज मित्र या कहूँ भाई जिनसे मैं खुद भी पहली दफा मिला बस सोशल मीडिया के सहारे ही तीन सालों से सम्बन्ध और संवाद बना हुआ था, शाह एजाज भाई आ गए.... भाई ने कहा कि आप हमारी एक्टिवा पर चलिए हम आपको

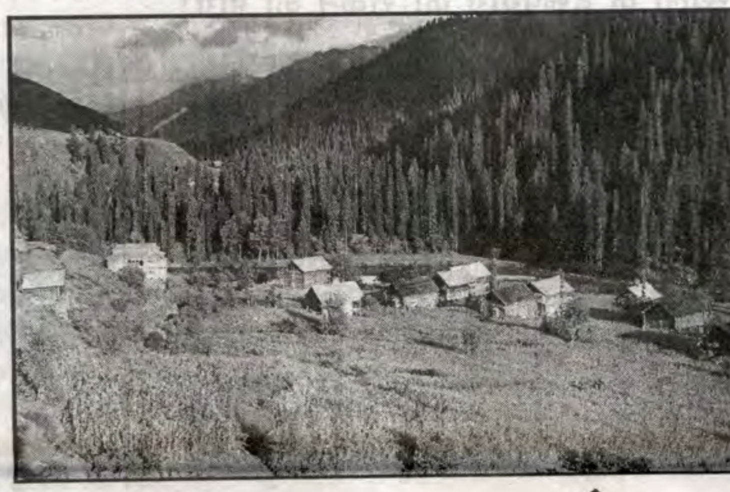

कश्मीर दिखाते हैं। और मैं तो चल दिया एक्टिवा पर और मेरे साथी सब टेक्सी से पहुंचे टैगौर हाल।

टैगौर हाल में तमाम कश्मीरी फरिश्तों के बीच ही बैठी थी हिंदी विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो. जोहरा अफजल जी और ख्यात लेखक निदा नवाज जी भी। घाटी में हिन्दी के विकास व विस्तार के लिए कार्यरत संस्था 'वादीज हिंदी शिक्षा समिति' ने 'मातृभाषा उन्नयन संस्थान' (पंजी.) इंदौर व 'आकाशवाणी केंद्र श्रीनगर' के साथ मिलकर टैगोर हॉल में हिंदी भाषा सारथियों के सम्मान एवं हस्ताक्षर बदलो अभियान की शुरुआत की थी। बच्चों ने कश्मीरी गीतों पर थिरकते अरमानों के साथ हमारा भी स्वागत किया जिससे है कश्मीर की महक आ रही थी। हाँ वही 'बुमरो बुमरो'।

सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ यह आयोजन प्रारंभ हुआ, जिसमें मुख्य अतिथि कश्मीर विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग की अध्यक्षा प्रो. जोहरा अफजल, रेडियो कश्मीर श्रीनगर के कार्यक्रम प्रमुख सईद हूमायूँ कौसर (स्वागता ६ यक्ष) एवं डॉ० निदा नवाज (राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित हिन्दी साहित्यकार) विशिष्ट अतिथि रहे। भारतीय जीवन बीमा निगम, जम्मू और काश्मीर बैंक एवं जम्मू कश्मीर पर्यटन विभाग ने इस कार्यक्रम की प्रस्तुति में सहयोग किया। शुरुआत में वादीज हिंदी शिक्षा समिति के निदेशक डॉ० अब्दुल अहद बंदरु ने सभी अतिथियों का स्वागत–सम्मान किया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य बच्चों व आवाम में हिंदी में हस्ताक्षर करने की भावना को जागृत करना, साथ ही साथ उन लेखकों, कवियों एवं विश्वविद्यालयों के शोधार्थियों के मनोबल को बढ़ाना था, जो हिंदी भाषा से जुड़े हैं और हिंदी साहित्य को लेकर अपने उज्जवल भविष्य के सपने देख रहे हैं। इस मौके पर मातृभाषा संस्थान से मैने हिन्दी की उपयोगिता और उसके कारण ही संस्कृति संरक्षण के महत्व को बताया। साथ ही हिंदी में हस्ताक्षर क्यों हो, इसकी उपयोगिता पर भी प्रकाश डाला। संस्थान के महासचिव अजय जैन 'विकल्प' ने मातृभाषा। काम की शुरुआत से अब तक के प्रकल्प पर विस्तार से चर्चा की। साथ ही संस्थान की उपाध्यक्ष डॉ० प्रीति सुराना ने विद्यालय स्तर से ही बच्चों को हिन्दी से जोड़ने और प्रेरणा को समझाया। कार्यक्रम में स्थानीय मीडिया सहित कई विद्यालयों के छात्र–छात्राएं, लेखक, शायर आदि शामिल हुए। शानदार संचालन की जिम्मेदारी अशफाक लोन ने निभाई। कार्यक्रम में वादीज हिंदी शिक्षा समिति की अध्यक्षा नसरीन अली ने सबका आभार माना। और हम सब पहुँच गए 'कहवा' पीने। वहीं कहवा जो अब तक कश्मीरी प्रेम के रूप में हमारे जेहन में जिन्दा हैं। प्रेम से कश्मीर का ताल्लुक तो बहुत ही गहरा हैं इस बात को हमने भी मान लिया क्योंकि कश्मीरी संस्कृति जो मिठास बाँट रही थी उससे तो कभी नहीं लगता की यहाँ भी रक्तरंजित होली खेली गई हैं?

खैर इसके बाद हम चले डल होते हुए चश्मेशाही, जहाँ चिनार के पत्तों के अभूतपूर्व सौन्दर्य के बीच में पत्थरों से रिसता मीठा पानी भी आता हैं जिसके बारे में कश्मीर कहता हैं कि यह पानी नेहरु जी और इंदिरा जी को रोज पीना होता था जिसके लिए वे अपने निजी विमान से यहाँ का पानी पीने के लिए बुलवाते थे। इसके बाद हम पहुंचे मुगल गार्डन जहाँ वादी के सौन्दर्य की झलक डल में बनी देवदार की परछाई की तरह खुद को डूबने पर मजबूर कर रही थी। शाम ढलने लगी और हम वापस अपने ठिकाने की तरफ लौटने लगे जैसे पक्षी दिनभर की मशक्कत के बाद शाम होते ही घरोंदों की तरफ लौट आते हैं।

दिन का ढलना, मतलब कश्मीर में तापमान का गिरना ही होता हैं। यहाँ बस तापमान गिरता हैं इमां नहीं। इस बात को हमने महसूस किया फिर वही शाम को खरीददारी करने डल गेट पहुँचने पर....

सर्द रात और दिन की थकन अपना काम बखूबी कर रही थी जिसने हमें दुबक कर कम्बल में घुसने को मजबूर कर दिया। और नींद ने आगोश में लेने भी बड़ी फुर्ती दिखाई। जैसे–जैसे रात बड़ने लगी मौसम और सर्द होता जा रहा था। हम तो सो गए क्योंकि सुबह फिर से नए सूरज के पास जाना था। और रेडियो कश्मीर भी। सुबह की थोड़ी–सी धुप ने जल्दी उठा दिया और हम तैयार हो कर निकल पड़े डलगेट की तरफ... क्योंकि हम रात में जाफरान और अखरोट खरीदना भूल गए थे, हम कहवा भी खरीद लाये पर वो मिठास नहीं जो केवल कश्मीर में थी।

फौज की चेकिंग के बाद नसरीन जी के साथ आकाशवाणी के दफ्तर पहुंचे जहाँ हम हिंदी पूतों का साक्षात्कार होना था, हुआ भी... और फिर हम तैयार हुए अपने मकां की तरफ लौटने को। इन्ही के बीच हमारे मेजबान की आँखों में थमी हुई बरसात का बूंदों के रूप में झलकना देख कर रुक–से गए, खैर जो आया है वो जायेगा ये नियति ने तय कर दिया हैं पर विरह की वेदना से उर भर तो जाता हैं। झलकती आँखों की नमी इस बात की गवाह दे रही थी कि हम जरुर अपने वतन की खुश्बू को समेट कर ले जा रहे हैं। इन्ही सब के बाद पुनः विमानतल की और लौटना जहाँ से अगली यात्रा दिल्ली की थी, इसी के बीच फिर फौज का वो खौफ जो कश्मीर के चेहरे पर साफ तौर पर देखा जा सकता था झलकने लगा। कश्मीर को आदत–सी हो गई है सियासती दर्द की, पर एक बात से फिर इंकार नहीं किया जा सकता कि कश्मीरी वैसे भी नहीं हैं जो हमें रोज पढ़ाए जाते हैं। कश्मीर के कुछ लोगो के कारण आवाम को क्यों सजा? खैर इन सब के बीच हमारे विमान ने भी दिल्ली के लिए उड़ान भर ली और हम समेट लाये वादी से रिसता प्रेम का कहवा। पर यकीनन यह कहवा नसरीन जी द्वारा बनवाए गए कहवे जैसा तो नहीं है।

प्रतिष्ठा में,

श्री राजनाथ सिंह जी,
माननीय गृह मंत्री, भारत सरकार
नार्थ ब्लॉक, नई दिल्ली-११०००१

विषय : कश्मीर में धार्मिक स्थलों के दुरूपयोग को रोकने की मांग।

महोदय,

कश्मीर में मजहबी (धार्मिक शब्द गलत, क्योंकि धर्म और मजहब में भारी अंतर है) स्थलों के दुरूपयोग पर संज्ञान लेने की कृपा करें।

१. मस्जिदों से जेहादी तराने जोर–शोर से बजाए जाते हैं।

२. पांपोर की मस्जिद में देश के तिरंगे झण्डे के चित्र को देखकर भारत विरोधी नारे लगाए गए और मस्जिद के इमाम ने भी निर्लज्जता से तिरंगे के चित्र को स्वीकार नहीं करने की घोषणा की ।

३. पत्थरबाजों को उकसाने और भड़काने में मस्जिदों के इमाम अहम भूमिका निभा रहे हैं।

४. आतंकियों और पत्थरबाजों के मानवाधिकारों की वकालत करने वालों पर भी सख्ती होनी चाहिए और कश्मीर में मुस्लिम मुल्लाओं के रवैये पर सख्त रुख अपनाया जाना चाहिए।

आपसे अनुरोध है कि जम्मू–कश्मीर सरकार धार्मिक संस्थान (दुरुपयोग) निवारण अधिनियम १९८८ को लागू करें। अनुरोध है कि इस विषय पर तत्काल कार्रवाई कराने की कृपा करें। इस सम्बंध में की गई कार्रवाई की जानकारी भिजवाने का कष्ट करें तथा धार्मिक स्थलों के दुरूपयोग पर पूरे देश में कानूनी प्रतिबंध लगाया जाये।

सादर,

भवदीय

(चन्द्रप्रकाश कौशिक)	(मुन्ना कुमार शर्मा)	(वीरेश त्यागी)
राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय महासचिव	राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री

प्रतिष्ठा में,

श्रीमती स्मृति जुबिन ईरानी जी,
माननीया सूचना एवं प्रसारण मंत्री,
भारत सरकार, शास्त्री भवन,
डॉ० राजेन्द्र प्रसाद मार्ग, नई दिल्ली-११०००१

विषय : "क्या हाल-मिस्टर पांचाल" टीवी धारावाहिक में गैर-कानूनी प्रावधान, तत्काल रोकना आवश्यक।

महोदय,

स्टार भारत नाम के टीवी चैनल पर कुछ दिन पहले १८:३० बजे से १९:०० बजे तक शुरू हुआ धारावाहिक "क्या हाल–मिस्टर पांचाल" नाम से है। इस धारावाहिक में गैर–कानूनी प्रावधान करके एक हिन्दू पुरुष की पाँच पत्नियाँ दिखाई जा रही हैं। यह बेहद गैर–कानूनी प्रावधान है। यह गैर–परम्परागत भी है। इसमें हिन्दुओं के अपमान के साथ–साथ भगवान् शिव और भगवती पार्वती जी को बड़े विचित्र और भद्दे ढंग से प्रस्तुत किया जा रहा है। कुछ दिन पहले "पहरेदार पिया की" धारावाहिक में नाबालिग ९ वर्ष के बच्चे का विवाह एक १८ वर्ष की लड़की से दिखाया जा रहा था। ऐसी जानकारी मिली है कि इस गैर–कानूनी विवाह के कारण इस धारावाहिक को बंद कर दिया गया है। इसलिए यह नितांत आवश्यक है कि *"क्या हाल–मिस्टर पांचाल" धारावाहिक पर तत्काल रोक लगा दी जाए।* इस सम्बंध में की गई कार्रवाई की जानकारी भिजवाने का कष्ट करें।

सादर,

भवदीय

(चन्द्रप्रकाश कौशिक)	(मुन्ना कुमार शर्मा)	(वीरेश त्यागी)
राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय महासचिव	राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री

शेष पृष्ठ 6 का

श्रीराम जन्मभूमि मन्दिर निर्माण........

मंदिर के रूप में प्रतिष्ठित पहले ही कर दिया है तथा वहाँ सदैव से श्रीराम की पूजा–अर्चना होती रही है और वो हमेशा होती रहेगी।' आज भारतीय मुसलमानों के लिए उचित समय और अवसर दोनों है कि वो अपना अतार्किक, अव्यावहारिक एवं तथ्यहीन बाबरमयी कट्टरवाद त्याग दें। वो समझें कि 'करोड़ों बहुसंख्यक हिन्दुओं के हजारों–लाखों वर्ष से ऐतिहासिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक अराध्य श्रीराम की जन्मभूमि पर किसी विदेशी आतंककारी द्वारा बलात् बनाये गये मस्जिदनुमा खंडहर जो अब तो १९९२ के बाद वहाँ है भी नहीं, के लिए बेसुरे राग अलापते रहने से उनका किसी भी प्रकार से भला नहीं होगा। यह समय भारतीय मुसलमानों के लिए कट्टरता त्यागकर वैश्विक स्तर पर समस्त मुसलमानों एवं इस्लाम को भारत, भारतीयता तथा भारतीय मुसलमानों की विशेष उदारवादी छवि के साथ गौरवान्वित करने का भी अद्भुत अवसर है। भारतीय मुसलमान पूरे विश्व को यह महान संदेश दे सकते हैं कि 'बेशक उन्होंने कालान्तर में विभिन्न कारणों अथवा परिस्थितियों में इस्लाम की पूजा पद्धति को धारण किया और आज उन्हें अपने इस्लाम पर कोई शर्म नहीं है परन्तु उतनी ही सच्चाई यह भी है कि श्रीराम व श्रीकृष्ण भी उनके उतने ही पूर्वज हैं, जितने हिन्दुओं के हैं। मुसलमान स्वीकार करें कि सभी अन्य भारतीयों की तरह ही भारतीय मुसलमानों के अनुवांशिक डीएनए में भी श्रीराम–श्रीकृष्ण हैं और सदैव रहेंगे।'

इस्लामिक कट्टरवाद के इतिहास व वर्तमान स्थिति दोनों को देखते हुए वैश्विक स्तर पर चाहे अधिकतर बुद्धिजीवी वर्ग को भारतीय मुसलमानों द्वारा श्रीराम जन्मभूमि मंदिर निर्माण में सहयोग जैसा विशाल ह्रदयी रवैया दिखाने की आशा बहुत "दूर की कौडी" लगती हो परन्तु मुझे (लेखक) का दृढ़मत है कि भारतीय मुसलमानों में से एक बड़ा तबका इसी श्रीराम व श्रीकृष्ण की अनुवांशिक समानता के कारण ठीक मेरी तरह ही अवश्य सोचता है। चूँकि इस प्रकार के मुस्लिम तबकों की सकारात्मक सोच को हमेशा से विदेशों से पोषित एवं संचालित भारत व सनातन विरोधी कट्टर इस्लामिक ताकतें मुल्ला–मौलवियों के माध्यम से "साम–दाम–दंड–भेद" से रोकने में कामयाब होती रही है। आज भारतीय मुसलमान पूरी स्वतंत्रता से इस्लाम को मानते हुए केवल बाबर के चरित्र को खारिज कर श्रीराम में अपनी जडों को स्वीकार करते हुए श्रीराम मंदिर निर्माण में बढ़–चढ़कर हिन्दुओं का साथ देने में आगे आते हैं, तो वो भारत की महान अखंडता एवं संप्रभुता को मजबूत करते हुए संपूर्ण विश्व समुदाय के पथ प्रदर्शक के राष्ट्रीय संकल्प में नया अध्याय लिख सकते हैं। भारतीय मुसलमानों द्वारा ऐसा करना वर्तमान में पूरे विश्व में इस्लामवादियों की घटती विश्वसनीयता को बहाल करने की दृष्टि से इस्लाम की भी महान सेवा होगी तथा पूरे विश्व में शांति, सद्भाव एवं प्रेम की नई इबादत सिद्ध होगी। अकाट्य सत्य यही है कि शांति में ही समृद्धि संभव है तथा कहीं भी बहुसंख्यकों को मानसिक–भावात्मक अशांत रखकर शांति–समृद्धि की बात करना सामाजिक व व्यवस्थागत दोनों ही दृष्टि से बेमानी एवं धोखा है। अब मुसलमानों को ही तय करना है उन्हें व उनकी भावी पीढ़ियों को शांति, समृद्धि एवं गौरवमयी विकसित जीवन चाहिए या शिया–सुन्नी के नाम पर ईरान–इराक में दशकों से चली आ रही मारकाट तथा सीरिया सहित अरब के कई देशों में फैली आईएसआईएस की घोर यंत्रणाओं भरे त्रासदी वाली भविष्य चाहिए। केंद्र व उत्तर प्रदेश सरकार सहित सभी शासकीय पक्षकार, राजनैतिक पार्टियाँ और सर्वोच्च न्यायालय चाहे जो और कुछ भी कहें परन्तु शाश्वत सत्य यही है कि श्रीराम जन्मभूमि स्थल पर अन्ततोगत्वा केवल और केवल श्रीराम मंदिर निर्माण ही होगा और यही एकमात्र उचित एवं दूरदर्शी समाधान ही नहीं अपितु शाश्वत सत्य है। इसके अतिरिक्त पास–पास मंदिर एवं मस्जिद बनाने आदि की बात करना 'येन–केन–प्रकरेण' समाधान की चाह में संकीर्ण तुष्टीकरण का ही परिचायक है तथा वो आगे चलकर समाधान के नाम पर पुनः समस्या के विकराल होने की संभावनाओं का "बीजारोपण" ही होगा। आज श्रीराम मंदिर निर्माण का मुद्दा केवल हिन्दू–मुस्लिम के अपने–अपने दावों के सच्चे–झूठे होने का, किसी पक्ष की हार–जीत का अथवा मंदिर–मस्जिद निर्माण करने तक का नहीं रहकर भारत के भावी जन चरित्र विकास के स्वरूप और भविष्य निर्माण का द्योतक बन गया है। इसलिए अविलम्ब केंद्र सरकार को लोकसभा व राज्यसभा के संयुक्त सत्र को आहूत कर कानून बनाकर श्रीराम जन्मभूमि मंदिर बनाने का कार्य करना चाहिए अथवा देश की सर्वोच्च न्यायालय को श्रीराम जन्मभूमि मुद्दे पर कठोर तथ्यात्मक निर्णय लेकर उसे उतनी ही कठोरता से लागू करवाने का साहस दिखाना चाहिए। अब देश में केवल सांप्रदायिक सौहार्द के लिए ही नहीं अपितु राष्ट्रीय एकता, अखंडता व संप्रभुता के लिए शीघ्रातिशीघ्र श्रीराम मंदिर निर्माण का मार्ग प्रशस्त किया जाना अपरिहार्यता बन गई है। ऐसा करना भारत के बहुआयामी एवं बहुस्तरीय दीर्घकालिक समरसता व सद्भाव भरे सर्वांगीण मजबूत भविष्य की अहम नींव सिद्ध होगा।

शेष पृष्ठ 1 का

योगेन्द्र वर्मा फिर बने........

पं० प्रमोद जोशी सहित उनके हिन्दूवादी नेताओं ने प्रदेश अध्यक्ष बनने पर योगेन्द्र वर्मा को बधाई दी। हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष सहित सभी जनपदों से आए हिन्दू महासभा के वीरों को प्रतीक चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर श्री कौशिक ने कहा कि हिन्दू महासभा देशभक्तों की पार्टी है। १८८३ से देश व धर्म के लिए काम कर रही है। ६७६ से रामजन्मभूमि का मुकदमा न्यायालय में भी *हिन्दू महासभा लड़ रही है।* हिन्दू महासभा ने कभी सत्ता का लालच नहीं किया। यदि लालच होता तो पहले प्रधानमंत्री पं० नेहरू नहीं वीर सावरकर होते। हिन्दू

महासभा का एक ही सपना है हमारा देश हिन्दू राष्ट्र बने। नवनिर्माण प्रदेश अध्यक्ष योगेन्द्र वर्मा ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि हिन्दू महासभा उत्तर प्रदेश का अध्यक्ष निर्वाचित होने पर जो खुशी मुझे हो रही है उसे हम ब्यान नहीं कर सकते। अध्यक्ष के रूप में मेरा कार्यकाल हिन्दू महासभा के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाएगा। योगेन्द्र वर्मा ने कहा कि हिन्दू ज्यादा से ज्यादा शस्त्र खरीदे क्योंकि बिना शस्त्र के धर्म की रक्षा नहीं हो सकती। परिवार में एक लाईसेन्स जरूर ले। प्रदेश अधिवेशन में मुख्य रूप से पवन शर्मा, गीताजंलि, अमरीश त्यागी, रेणु सिंह, अश्वनी बालियान, साक्षी वर्मा, दीपक वर्मा, नवीन कंसल, दुर्गेश शुक्ला, अमर यादव, प्रमोद शुक्ला, मनोज ठाकुर, नरेन्द्र पाल, दीपक रूहेला, प्रदीप रूहेला, अभिषेक अग्रवाल सहित सैकड़ों वीर उपस्थित रहे।

शेष पृष्ठ 1 का

महाचंडी देवी मंदिर ध्वजारोहण......

शस्त्रों सहित भगवा ध्वज व प्रसाद सहित अन्य पूज्य सामग्रियों से पवित्र रथ को सजाया गया। ध्वजारोहरण यात्रा अपने परम्परागत क्षेत्रों का भ्रमण करते हुए जैसे शारदा रोड़ स्थित प्राचीन श्री राधा कृष्ण मन्दिर परिसर कार्यालय हिन्दू महासभा से आरम्भ होकर देहली गेट चोपला, ओडियन रोड, भुमिया का पूल चोपला, गोला कुंआ चोपला, आजाद रोड, शम्भू दास गेट होती हुई नौचंदी मैदान स्थित महाभारत कालीन प्राचीन महाचंडी देवी मंदिर वह प्राचीन मां दुर्गा मंदिर पर समापन हुई। प्राचीन महाचंडी देवी मंदिर की मुख्य पूजा और ध्वजारोहण करने का आर्शीवाद पजापति महासंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रोहताश्र प्रजापति वह हिन्दू महासभा के प्रदेश अध्यक्ष योगेन्द्र वर्मा जी को संयुक्त रूप से प्राप्त हुआ। वह मां दुर्गा माता के मन्दिर की मुख्य पूजा करने का आर्शीवाद प्रसिद्ध समाज सेवी श्री द्वारका नाथ चौबे जी एवम् सुरेश भोला रेल बाबू को संयुक्त रूप से प्राप्त हुआ। ध्वजारोहरण यात्रा में शामिल भक्तगण जय हिन्दू राष्ट्र, भारत माता की जय, जय श्री राम, वन्देमातरम्, अमर हुतातमा पंडित नाथू राम गोडसे जी के नारे लगाते भजन–कीर्तन की धुन पर नाचते गाते हुए चल रहे थे ध्वजारोहण यात्रा में मुख्य रूप से उपस्थित भक्तगण संजय शर्मा, राकेश डेरी, राजन साड़ी, गीमा रानी, त्रिषी कुमार, सोनू कुमार, शगुन शर्मा, गोपाल, सतीश कुमार राजीव कुमार रंजन शर्मा मनीष शर्मा, हर्ष गुप्ता आदि शामिल थे कार्यक्रम संयोजक दीपक शर्मा सहित सैकड़ों माता के भक्त शामिल हुऐ। ध्वजारोहण यात्रा पूरे शहर में निकाली गई। मेरठ शहर के निवासियों ने जगह–जगह यात्रा का भव्य स्वागत किया। पुरुषों, महिलाओं व बच्चों ने पुष्प वर्षा कर यात्रा का स्वागत किया।

शेष पृष्ठ 4 का

डायबिटीज एवं नपुंसकता.....

❖ इस प्रकार यह देखा गया है कि यदि डायबिटीक पेशेन्ट अपनी बीमारी को पूरी तरह नियंत्रित कर ले और कुछ दवाइयों का प्रयोग कर ले तो उसकी सभी समस्याओं का समाधान हो जायेगा।

❖ मधुमेही एवं नपुंसक रोगी को आहार पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

❖ भोजन में जौ और चने का आटा गेहूँ के आटे में मिलाकर सेवन करना चाहिए। इसके अतिरिक्त कच्चे चने का भी सेवन करना चाहिए। दाल, काजू, मूँगफली, चने से बनी चीजें सामान्य मात्रा में ली जा सकती हैं। कम शर्करा वाले फल, सेब, पपीता १०० ग्राम तक खाये जा सकते है।

इस प्रकार हम यह देखते हैं कि आहार में कुल १५० से १८० ग्राम तक कार्बोहाइड्रेटस, ६० ग्राम से ८० ग्राम तक प्रोटीन, ७० से ८० ग्राम वसा चाहिए। बाकी कुल कैलोरी १८०० से ज्यादा न हो। इसके अतिरिकत मेथी, करेला, सोया शाक, जामुन, लहसुन, एलोवेरा, दालचीनी, ग्रीनटी, पालक, कोकोआ, फाइबर युक्त सोयाबीन, दलिया, राजमा आदि का सेवन कर सकते हैं। चीनी, तली भुनी चीजें, डेयरी उत्पाद, चाय, कॉफी, तम्बाकू और शराब अधिक कार्बोहाइड्रेट्स वाले पदार्थ जैसे गाजर, चावल, केला, ब्रेड का सेवन वर्जित है। यदि मधुमेही रोगी उपरोक्तानुसार कार्य करता है तो निश्चित ही उसे मधुमेह से मुक्ति मिल जाती है।

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

विशेषतायें जो अन्यत्र नहीं मिलतीं

1. पत्रकारिता के उच्च राष्ट्रनिष्ठ मानकों के लिए प्रतिबद्धता
2. राष्ट्र और हिन्दुत्व को हानि पहुँचाने वाले कारकों पर पैनी दृष्टि
3. साम्प्रदायिक और पृथकतावादी सोच पर जमकर प्रहार
4. राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर पारदर्शी चर्चा
5. सामाजिक सरोकारों की तह तक जाकर समाधानपरक बहस
6. प्रेरक प्रसंग, महान् व्यक्तियों से प्रेरणा लेने का माध्यम
7. भ्रष्टाचार, अपराध और अंतर्राष्ट्रीय चिंतन पर तीखा आक्रमण

हमारा संकल्प

1. हम एक ऐसी समतामुलक राष्ट्रीय व्यवस्था के पक्षधर हैं जहां निर्धनता का अभिशाप न हो, किसी का शोषण न हो, न्याय वनपशुओं की चेरी न बने, सब समान हों, एक दूसरे के सहयोगी हों।
2. हम एक ऐसी संस्कृतिक व्यवस्था के पक्षधर हैं जिसमें हिन्दुत्व के सार्वभौमिक और सार्वकालिक सिद्धांतों को प्रतिष्ठित किया जा सके, जिससे कि हिंसा, पाप, शोषण, विषमता और संवेदनहीनता की कालिमा से विश्व को मुक्ति मिलें।

केवल इतना ही नही, अन्य भी बहुत सी जीवनोपयोगी सामग्री।
आपका साप्ताहिक, आपकी भावनाओं का दर्पण।

शेष पृष्ठ 1 का

भगवान महावीर का अवतरण....

पर कहा था कि भरे हुए पेट को और भरने की लालसा के कारण यह मनुष्य हिंसा, झूठ, कष्ट, मायाचारी और परिग्रह संग्रह में लगता है। जिसके कारण सर्वत्र आतंक का भय फैला हुआ है। हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील और परिग्रह यह प्रमुख रूप से पापों के द्वार हैं। इन पापों के कारण मनुष्य को दुःख ही भोगना पड़ता है। राग और द्वेष के कारण प्राणी इन पापों को करता है और दुर्गति को प्राप्त होता है। अनादि निधन इस संसार में अनादि कालीन यह जीव घोर दुःखों में सहता आ रहा है। पापों की निवृत्ति के बिना सुखदायी जीवन असंभव होने से भ. महावीर ने धीरे–धीरे पापों से निवृत्ति करता हुआ पूर्ण निवृति पथदर्शन का उपदेश दिया। अनादिकालीन इस जीव की राग द्वेष से पूर्ण रूप से निवृत्ति नहीं होने के कारण एक देश त्याग याने अणुव्रत अर्थात छोटे–छोटे रूप में वन ग्रहण कर एक देश निवृत्ति का मार्ग बनाया। इसे ही अणुव्रत कहा और इस संस्था को श्रावक नाम की संज्ञा दी। इसी का नाम है विकल चारित्र। जो परिग्रह सहित होता है। पंच पापों से सम्पूर्ण प्रकार से निवृत्ति सकल चारित्र है और यह सम्पूर्ण प्रकार के परिग्रहों से रहित गृहस्थ का होता है जिसे निर्ग्रथ दिगम्बर मुनि कहा है, वह महाव्रती होता है।

हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील व परिग्रह का स्थूल रूप से त्याग करना व उसका दृढता से अंतर्बाह्य पालन करने से भी यह जीव अपरिमित सुख व शांति का अनुभव करता है। वह आनंद से भरपूर हो जाता है। भगवान महावीर ने इस स्थूल पापों को त्याग करने का भी उपदेश दिया। इसे पालन करने के लिए जिन–जिन कारणों से पाप प्रवृत्ति बनती है उसका त्याग करने को कहा। जैसे त्रस जीव द्विइन्द्रियों से लेकर सभी पंचेंद्रिय प्राणियों का स्थूल रूप से भी घात नहीं करता है जैसे किसी भी जीव का मनुष्य पशु–पक्षी आदि जीवों का अंग छेद करना, रस्सी से बाँधकर रखना, डंडे आदि से क्रूरतापूर्वक पीटना, शक्ति से अधिक भार लादना, खानपान रोक देना, वध करना ये सब अनिचार हैं। इसको बिना प्रयोजन के करना यह सब हिंसा है। इसी प्रकार से झूठ, चोरी, कुशील और परिग्रह इस सभी के पाँच–पाँ अतिचार कहे हैं और इनसे स्थूल रूप से निवृत्त होने के लिए सबकी पाँच–पाँच भावनाएँ बनाई है। इन सबका व्रतपूर्वक पालन करने वाला भी लोक में पूज्यता को प्राप्त हो जाता है।

लोक विरुद्ध, राज्य विशुद्ध, धर्म विघातक ऐसी स्थूल झूठ न तो स्वयं बोलता है और न दूसरों से बुलवाता है। दूसरों की विपत्ति के लिए कारणभूत सत्य को भी न स्वयं बोलता है न दूसरों से बुलवाता है। न दूसरे की निंदा करता है, दूसरे की एकान्त या गुप्त बात को प्रकट करना, चुगली करना, नकली दस्तावेज आदि लिखना, दूसरों की धरोहर का अपहरण करना ऐसे वचन बोलना ये सब अविचार हैं। इसी तरह से दूसरे की रखी हुई, गिरी हुई, भूली हुई वस्तुओं और बिना दिये हुए धन को जो न तो स्वयं लेता है न उठाकर दूसरों को देता है यह स्थूल अचौर्य व्रत है। किसी को चोरी के लिए भेजना, चोरी की वस्तु लेना, राज्य नियमों का उल्लंघन करना, बहुमूल्य वस्तु में समान रूपवाली, अल्प मूल्य की वस्तु मिलाकर बेचना और देने के लिए कम और लेने के लिए अधिक नाप–तौल करना ये अतिचार है। जो पाप के भय से पराई स्त्रियों के पास न तो स्वयं जाता है और न दूसरों को भेजता है यह स्वदार संतोष ब्रह्मचर्य व्रत है। इस व्रत के भी पाँच अविचार हैं। सत्य वचन बोलना, कामोत्तेजक बातें करना, काम सेवन की अधिक तृष्णा रखना, व्यभिचारिणी स्त्रियों के यहाँ गमन करना, वासना दृष्टि से अंगोज्या को निहारना आदि अतिचार हैं। धन धान्यारिक आदि का परिमाण करना एवं इससे अधिक में निःस्पृह रहना परिमित परिग्रह परिमाण अणुव्रत है। आवश्यकता से अधिक का संग्रह करना, लाभादिक को देखकर आश्चर्य करना, घोड़े आदि पर अधिक भार लादना, जोतना, यह सब अतिचार है। इन सब व्रतों का एक देश पालन करने से स्वपर का कल्याण हो सकता है। देश, राष्ट्र, समाज, विश्व में अपार शांति का साम्राज्य इन व्रतों का अनुसरण करने से ही संभव है। वर्तमान में प्रायः सभी असंयमी अव्रती रहने में देश में समाज में, समूह में आतंक का भय छाया हुआ है। अविश्वास भ्रष्टाचार, व्यभिचार, छीना–झपटी हत्या आदि का सर्वत्र बोलबाला है। जो लोग आचरण के लिए श्रेष्ठ से श्रेष्ठ चर्चा कर रहे हैं, वहाँ भी केवल चर्चा मात्र रह गई है। बोलने वालों में ऐसी श्रेष्ठ चर्चा का श्रेष्ठ आचरण का अपूर्व अभाव पाया जा रहा है। एक छत्र साम्राज्य की अभिलाषा जोरों पर है। वैसे यह दुःख रूपी विभिन्नता दुःखमा काल में कोई आश्चर्य नहीं है। क्योंकि पंचम काल है। फिर भी सुख और शांति का संचार भ. महावीर के द्वारा कहे गये अणुव्रतों का अतिचार रहित पालन करने से ही इस काल में भी सम्भव है। भगवान महावीर की जन्म जयंती के पावन प्रसंग पर हम यही कामना करते हैं कि सब जीवों में मैत्री, करुणा, दया, पारस्परिक मातृभाव वृद्धिंगत होवे।

-: तत्काल ग्राहक बनें :-

सदस्यता शुल्क

वार्षिक...150/- रुपये
द्विवार्षिक.....................................300/- रुपये
आजीवन सदस्य..............................1500/- रुपये

ड्राफ्ट या मनीआर्डर
''हिन्दू सभा वार्ता'' के नाम भेजें।

पता :- हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001

नोट :- केवल स्थानीय चैक स्वीकार किये जाते हैं।

यह भी सच है

जर्मनी में कुरान वितरण पर प्रतिबंध

इत्तेमाद (२१ दिसम्बर, २०१७) के अनुसार जर्मनी की फेडरेल अदालत ने देश में सल्फी मुसलमानों के संगठन सच्चा धर्म पर प्रतिबंध लगा दिया है। यह संगठन जर्मनी में सार्वजनिक स्थानों पर कुरान का मुफ्त वितरण करता है। बताया जाता है कि निचली अदालत के फैसले के खिलाफ फेडरल अदालत में अपील की गई थी जिसे फेडरल अदालत ने ठुकरा दिया। इस संगठन द्वारा जर्मनी के नगरों में आम नागरिकों को गत कई वर्षों से मुसलमानों के धार्मिक ग्रंथ कुरान को जर्मन भाषा के अनुवाद सहित मुफ्त बांटा जाता है। ज्ञातव्य है कि सच्चा धर्म को जर्मन के गृहमंत्रालय ने २ माह पूर्व अवैध संगठन घोषित किया था। गुप्तचर सूत्रों का आरोप था कि इस संगठन की आड़ में इस्लाम के आतंकवादी संगठनों के लिए भर्ती की जाती है। इस प्रतिबंध का उल्लेख करते हुए जर्मनी के गृहमंत्री ने कहा था कि यह संगठन इस्लाम के प्रचार की आड़ में साजिशों और नफरत का मकड़जाल रच रहा है। सरकार द्वारा प्रतिबंध लगाने के बाद जर्मनी में १६० स्थानों पर पुलिस ने छापे मारकर कई लोगों को गिरफ्तार किया था। गृहमंत्रालय द्वारा इस संगठन पर प्रतिबंध लगाने को इस संगठन के प्रमुख इब्राहिम अबु नाजी ने चुनौती दी थी। उसके वकीलों ने कहा था कि जिस संगठन पर प्रतिबंध लगाकर कुरान के वितरण को रोकने का परिवर्तन किया गया है ऐसा कोई संगठन नहीं है। जब इस याचिका पर सुनवाई शुरू हुई तो याचिओं ने अपनी याचिका वापस ले ली। उन्होंने यह नहीं बताया कि उन्होंने अपनी याचिका क्यों वापस ली थी। फेडरल अदालत ने कहा कि क्योंकि संगठन ने चुनौती देनी वाली याचिका वापस ले ली है इसलिए प्रतिबंध संगठन पर बरकरार रहेगा।

राष्ट्रवाद पर संकट

जिस प्रकार आज देश में राष्ट्रवादी शक्तियों के विरुद्ध अनेक षडयंत्र रचे जा रहें हैं, वह भविष्य में एक बड़े संकट की घण्टी बजने जैसा अलार्म है। फिर भी राष्ट्रवादी नेता अपने अपने पदों पर सुशोभित हो कर अनेक राष्ट्रवादी कार्यो में लगे अपने ही कार्यकर्ताओं की सहायता करने के स्थान पर उनके कार्यो को अपराध मानकर होने वाली कानूनी प्रक्रिया होने पर भी कोई संवेदना नही रखते। घर वापसी, लव जिहाद व गऊ रक्षा संबंधित अनेक राष्ट्रवादी कार्यो में जुटे रहने वाले सैकड़ो–हजारों कार्यकर्ता आज अपनी ही सरकार में उपेक्षित है और प्रताड़ित हो रहें हैं। इस प्रकार राष्ट्रवादियों की बार बार उपेक्षा होते रहने से क्या राष्ट्रभक्तों का मनोबल नही टूटेगा? क्या राष्ट्रभक्तों के मूल्यांकन में कभी कोई सुधार होगा या वे यौंही समझौतावादी राजनीति के शिकार होते रहेंगे? क्या ऐसे में देशभक्तों का देश की राजनीति से मोहभंग नही होगा? जबकि आधुनिकता की चकाचौंध ने राजनीति में युवाओं की सकारात्मक सक्रियता को निर्मूल किया हुआ हैं। इसीलिए उनको राष्ट्रभक्ति के लिए राजनीति का पाठ पढ़ने में कोई रुचि नही होती। क्या ऐसे में भविष्य में आने वाली पीढ़ियों को अपने राष्ट्र की व्यवस्था को बनाये रखने व सामाजिक दायित्व निभाने के लिये कोई आउटसोर्सिंग का सहारा लेना पड़ेगा? यही कारण है कि देश के टुकड़े करके बर्बादी तक जंग लड़ने वाले देशद्रोही आज नेता बन रहें हैं। अनेक देशद्रोही शक्तियां राष्ट्रवाद की भावना और उसकी लहर को नष्ट करने के लिए हिंदुओं को जातिगत आधार पर बांटने के साथ साथ जिहादियों को भी बढ़ावा दे रही हैं। परिणामस्वरुप अब राष्ट्रवादी व उनके समर्थक विभिन्न प्रकार से सुनियोजित षडयंत्रों के कारण भविष्य में अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने में सफल हो पाएंगे या नही, यह संशय होने लगा है। अतः राष्ट्रवादी नेताओं को अपने छोटे छोटे समर्पित कार्यकताओं व स्वयं सेवकों का तिरस्कार नही करना चाहिये बल्कि उनका सहयोग करके राष्ट्रवादी कार्यों को प्रोत्साहित करें अन्यथा वर्तमान कुटिल राजनीतिज्ञ छदम धर्मनिरपेक्षवादी, तथाकथित बुद्धिजीवी व स्वयंभू मानवतावादी, देशद्रोहियों व विदेशी शक्तियों के साथ मिलकर सत्ता परिवर्तन में सफल हो सकते हैं। आज देश में कुटिल राजनेता बात बात पर और बार बार राष्ट्रवाद पर प्रहार करने के लिए अनुचित अवसरों का सहारा ले कर भोले भाले देशवासियों को भ्रमित करने के मार्ग ढूंढने में लगे हुए हैं। उनका एकमात्र लक्ष्य है कि देश में राष्ट्रवादियों के विरुद्ध निरंतर नकारात्मक वातावरण बना रहें और भविष्य में वे पुनः राजसत्ता पा सकें। जिस प्रकार जीवन में बईमानी व चोरी के अनेक मार्ग होते हैं परंतु ईमानदारी का सत्य ही केवल एक मार्ग हैं।इसीलिए राष्ट्रभक्ति विभिन्न मार्गो पर चलने की अनुमति नही देती। उसमें राजनीति तो हो पर राष्ट्रनीति ही सर्वोच्च होती हैं। बुद्धिजीवियों में अनेक किन्तु–परंतु हो सकते हैं लेकिन राष्ट्र सर्वोपरि के प्रति कोई समझौता अवनति के मार्ग पर ही जायेगा। अनेक प्रश्न उठते हैं जिनका सार केवल यही है कि क्या महात्मा विदुर व आचार्य चाणक्य के समान कोई महान निस्वार्थ व्यक्तित्व राजनीति के शीर्ष पर उभरेगा जो भारत महान की श्रेष्ठता को स्थापित कर सकें? क्या हमारे भारत में कभी मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम व योगीराज श्री कृष्ण के समान आदर्श भगवान रुपी युग पुरुष पुनः अवतरित होंगे? क्योंकि प्रायः सभ्य समाज भगवान पर अत्यधिक भरोसा करके विभिन्न राष्ट्रीय व सामाजिक समस्याओं को व स्वयं अपने आप को भी भगवान भरोसे छोड़ कर अपने अपने कर्तव्यों व दायित्वों से बचता आ रहा है।

कबिरा खड़ा बजार में

धर्म परिवर्तन मानवाधिकार का हनन

संसार में कोई ऐसा देश नहीं है, जहाँ धर्मान्तरण के सामूहिक आयोजन होते हो। यह भारत में ही सम्भव है। यहां ईसाई मिशनरियां सामूहिक धर्मान्तरण के कार्यक्रम आयोजित करती है, इसमें बड़े–बड़े पादरी, बिशप और राजनेता भी भाग लेते हैं। ईसाई मिशनरियों ने आत्म शुद्धि के नाम पर धोखे से हजारों महिलाओं को एकत्र किया। वे महिलायें वे ही थी जो किसी न किसी परेशानी से पीड़ित थी। उनसे कहा गया कि आपके घर में शैतान है। सबसे पहले शैतान को घर से दूर भगाना होगा। वह शैतान देवी–देवताओं के चित्र और मूर्तियां है। साथ ही माथे पर बिन्दी लगाना और सिन्दूर का प्रयोग करना भी बुरी आत्माओं को बुलाता है। आप इस सब को त्याग दें। आपकी आत्मा की शुद्धि हो जायेगी। भोली–भाली महिलायें जो स्वयं परेशानी में थी, वे यह समझती थी कि शायद इस उपाय से उनकी समस्या हल हो जाये। उन्हें नहीं पता था कि उनका ईसाईकरण किया जा रहा है। जब कुछ लोगों ने इस सम्मेलन का विरोध किया तो उनका कहना था कि वे केवल आत्म शुद्धि करा रहे है। तंत्र–मंत्र और वामाचार के द्वारा धर्म प्रचार करना, एक धोखा है। हम समाचार पत्रों में अनेक तांत्रिकों के विज्ञापन पढ़ते हैं, जो प्रत्येक समस्या को हल करने की गारन्टी लेते है। दो वर्ष पहले पुलिस ने उनके विरूद्ध अभियान भी चलाया था, यह कानूनी अपराध है। लेकिन ईसाई मिशनरियों को ऐसे टोटके करने की अनुमति कौन देता है? यदि कोई संगठन इनकी इस हरकत का विरोध करता है तो उसे साम्प्रदायिक कह दिया जाता है। साम्प्रदायिक और जड़वादी कौन है? जो तत्त्व भारतीय देवी–देवताओं को शैतान कह रहे है। भारतीय नारी का प्रतीक बिन्दी को शैतानियत का नाम दे रहे हैं क्या वे धर्मनिरपेक्ष या राष्ट्रभक्त हैं? वे तो देश देश की संस्कृति और हिन्दू धर्म के प्रति घोर विरोधी हैं। सन् २००४ के पश्चात देश में ईसाई मिशनरियों का जाल पूरे देश में अधिक सक्रिय हो गया है। इसके पीछे कौन है? कौन सी ऐसी राजनीतिक शक्ति है जिसने इन्हें संरक्षण दे रखा है। भारतवर्ष का हिन्दू समाज केवल जातीय पहचान के लिये संघर्ष कर रहा है। वह अपने धर्म के महान तत्त्व ज्ञानों से अनभिज्ञ है। यदि हमारे धर्म गुरू या संगठन तत्त्व ज्ञान का प्रचार करें और सरल भाषा में हिन्दुत्व की शिक्षा दें तथा एक ऐसा वर्ग निर्मित करें जो राष्ट्र और धर्म के लिये सदा समर्पित भाव से कार्य करे। यदि हम देश में ३० प्रतिशत हिन्दुओं तक हिन्दुत्व का तत्त्वज्ञान पहुंचाने में सफल हो गये, तो यह निश्चित है कि शेष ७० प्रतिशत हिन्दू भी स्वतः ही हिन्दुत्व के प्रति परम आस्थावान हो जायेंगे फिर न तो जातिवाद रहेगा और न ही ईसाई मिशनरियों का इतना साहस कि वे खुलेआम धर्मान्तरण कराने का साहस कर सके। कभी–कभी ऐसा प्रतीक होता है कि ईसाई मिशनरियों के धर्मान्तरण अभियान में स्वार्थो और पदभ्रष्ट हिन्दुओं का सहयोग भी होता है। ईसाई सबसे पहले किसी ग्रामीण क्षेत्र में एक मकान किराये पर लेकर वहां प्रार्थना सभा करते है। ये मकान शत–प्रतिशत हिन्दुओं के ही होते है। क्या उन कुलघाती हिन्दुओं को यह ज्ञात नहीं कि उनके मकान में धर्मान्तरण का कार्य होगा? ये सब कुछ जानते हैं लेकिन अल्प आर्थिक स्वार्थ के कारण देश और धर्म से विश्वासघात करते है। हिन्दू समाज को दो स्तरों पर लड़ना होगा। पहला यह कि ईसाई मिशनरियों के टोटके और तंत्र प्रक्रिया में लोगों को फंसाने की नीति का खुलासा करना होगा, साथ ही हिन्दू तत्त्वज्ञान का प्रचार व्यापक स्तर पर किया जाना चाहिये। नगरों या महानगरों में सगोष्टी बुलाने से काम नहीं चलेगा। आम आदमी के मध्य आना आवश्यक है। धर्मान्तरण मानवाधिकार का हनन है। इस हनन को तत्काल रोकना मानव हित में है।

वीरेश त्यागी
E-mail : viresh.tyagi@akhilbharathindumahasabha.org

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट की गई डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2016-17-18
रजि सं. 29007/77
साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता
दिनांक 28 मार्च से 03 अप्रैल 2018 तक

स्वत्वाधिकारी अखिल भारत हिन्दू महासभा के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक मुन्ना कुमार शर्मा द्वारा स्कैन 'एन' प्रिन्ट, 115, कीर्ति नगर इन्डस्ट्रीयल एरिया, दिल्ली मुद्रित तथा हिन्दू महासभा भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। दूरभाष 011-23365138, 011-23365354
E-mail : akhilbharat_hindumahasabha@yahoo.com, editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org
सम्पादक : मुन्ना कुमार शर्मा, प्रबंध सम्पादक : वीरेश कुमार त्यागी
इस पत्र में प्रकाशित लेख व समाचारों की सहभागिता, संपादक-प्रकाशक की नहीं है। सम्पूर्ण विवादों का न्यायिक क्षेत्र नई दिल्ली है।